हिन्दी

Teachers' Manual

कक्षा–7

पाठ–1

हम पंछी उन्मुक्त गगन के

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कविता से–

1. हर प्राणी स्वभाव से स्वतंत्रता-प्रिय है । सारी सुख-सुविधाओं से पूर्ण होने पर भी परतंत्रता स्वतंत्रता का स्थान नहीं ले सकती। पिंजरे में बंद करके मनुष्य पक्षी की स्वतंत्रता छीन लेता है। उसकी मुक्त उड़ान की इच्छा को रोक देता है। यही कारण है कि पक्षी सभी सुख-सुविधाएँ पाकर भी पिंजरे में बंद नहीं रहना चाहते।
2. पक्षी चाहते हैं कि वे नीले आकाश की सीमा तक उड़ते चले जाएँ और तारारूपी अनार के दानों को चुगें । वे चाहते हैं कि धरती और आकाश की मिलन-रेखा तक होड़ लगाकर उड़ें। या तो क्षितिज तक पहुँच जाएँ या फिर उनकी साँसें ही थम जाएँ। पक्षी चाहते हैं कि भले ही उनको घोंसलों और डालियों से वंचित कर दिया जाए लेकिन उनकी मुक्त उड़ान में बाधा न डाली जाए।
3. पक्षी चाहते हैं कि वे सीमाहीन क्षितिज तक उड़ान भरने को स्वतंत्र हों। इसके लिए वे अपने प्राणों की बाजी लगाने को भी तैयार हैं। यद्यपि क्षितिज कोई वास्तविक स्थल या सीमा नहीं है, वह आगे ही आगे बढ़ता चला जाता है लेकिन क्षितिज को छूने की अभिलाषा जीवन में सर्वोच्च लक्ष्य को पाने की चाह की प्रतीक है। ऐसी चाह केवल स्वतंत्र व्यक्ति ही कर सकता है पराधीन नहीं।

कविता से आगे–

1. **(क)** बड़ी से बड़ी सुख-सुविधाएँ भी आजादी का विकल्प नहीं हो सकतीं। उड़ना पक्षियों के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। पिंजरों में बंद करके हम उन्हें उड़ान से वंचित कर देते हैं। अत: पक्षियों को पालने का यह ढंग उचित नहीं। यह उन पर अत्याचार है।

   (ख) मैंने अपने पड़ोस में एक सज्जन को कबूतर पालते हुए देखा है। उन्होंने घर के आँगन में कबूतरों के रहने के लिए दड़बे (घोंसले) बना रखे हैं। वह सुबह-शाम उनको आकाश में उड़ाते हैं। उन्होंने छत पर एक ऊँचा मचान या छतरी बना रखी है जिस पर कबूतर बैठते हैं। वह दो बार कबूतरों को दाना खिलाते हैं।
2. पक्षियों को पालने वाले लोग उन्हें प्राय: पिंजरों में बंद करके रखते हैं। अपने मनोरंजन की खातिर ये लोग पक्षियों को उनकी स्वाधीनता से वंचित कर देते हैं। वे उनके लिए सुंदर और मूल्यवान पिंजरा बनवाते हैं । उनको स्वादिष्ट पदार्थ खाने को देते हैं। यह भूल जाते हैं कि कोई भी सुख-सुविधा आजादी का स्थान नहीं ले सकती। इस प्रकार पिंजरा पक्षी की स्वतंत्रता का हरण कर लेता है। इसके साथ ही पक्षियों को बंदी बनाकर रखने से पर्यावरण पर भी कुप्रभाव पड़ता है। प्रकृति के संतुलन-चक्र में हर प्राणी का अपना स्थान और महत्व है। उसमें मनुष्य का हस्तक्षेप संतुलन को अस्थिर करता है।

अनुमान और कल्पना–

1. अब इस बात में कोई संदेह नहीं रहा है कि मनुष्य की वर्तमान जीवन-शैली और शहरीकरण की योजनाओं ने पक्षियों को बहुत हानि पहुँचाई है। घरेलू पक्षियों की अनेक प्रजातियाँ मानवीय गतिविधियों के कारण लुप्त होने के कगार पर पहुँच गई हैं, अनेक तो लुप्त भी हो गई हैं। शहरीकरण की दौड़ तथा सड़क आदि बनाने में वृक्षों का निर्दयता से विनाश किया गया है। पक्षियों को दाना डालने का रिवाज खत्म हो गया है। ये सभी बातें पक्षियों की शत्रु बन गई हैं।

   वाद-विवाद–पक्ष में - आज मनुष्यों की बदलती जीवन-शैली में पक्षियों के लिए कोई स्थान नहीं रह गया है। उनका घरों में प्रवेश बंद कर दिया गया है । गौरैया, पडुखी, कबूतर, गलगल आदि घरों में प्राय: दिखाई पड़ने वाले पक्षी गायब हो गए हैं । खेतों और पेड़-पौधों में रासायनिक खादों के प्रयोग से भी पक्षियों का विनाश हुआ है । पक्षियों के न रहने पर अनेक समस्याएँ खड़ी हो सकती हैं । इससे प्राकृतिक पर्यावरण का संतुलन गड़बड़ा जाएगा । पक्षी अनेक हानिकारक कीट-पतंगों को खाते हैं और हमारे स्वास्थ्य तथा फसलों की सुरक्षा में योगदान करते हैं । पक्षी प्रकृति के अभिन्न अंग हैं । उनकी मधुर बोली, क्रीड़ाएँ और उड़ान मनोरंजन के नि:शुल्क साधन हैं । अत: हमें पक्षियों के प्रति मित्रभाव रखना चाहिए। उनके निवास और भोजन में सहयोग करना चाहिए ।

विपक्ष में—मनुष्य और पक्षी प्रकृति में आदिकाल से रहते आ रहे हैं । जब मनुष्यों की जीवन-शैली प्रकृति पर आश्रित थी तब भी अनेक पक्षी प्रजातियाँ लुप्त होती रहीं । अत: पक्षियों के जीवन पर मानव की वर्तमान जीवन-शैली का प्रभाव बहुत सीमित रूप में ही पड़ता है । प्राणी जगत का नियम है कि शक्तिशाली या अनुकूलतम ही जीवित रहता है। अत: पक्षी और मनुष्य में जो प्रकृति और पर्यावरण से सामंजस्य स्थापित कर लेगा वही जीवित रहेगा । मनुष्यों और पक्षियों दोनों के लिए प्रकृति में पर्याप्त स्थान है । अत: मनुष्य अपने विकास और प्रगति को क्यों रोके ? शहरीकरण में यह ध्यान रखा जाय कि पर्याप्त मात्रा में हरियाली और पेड़-पौधे भी रहें ताकि पक्षी अपने घोंसले बना सकें ।

2. घरेलू पक्षी प्राय: घरों के अंदर घोंसला बना लेते हैं । धीरे-धीरे उनसे सहमति और स्नेहभाव उत्पन्न हो जाता है । यदि मेरे घर में किसी पक्षी ने आवास बनाया है और मुझे उस घर को छोड़ना पड़ता है तो मैं चाहूँगा कि मेरे जाने के बाद उसे किसी प्रकार का कष्ट न हो । यदि संभव हुआ तो मैं पक्षियों को अपने साथ ही दूसरे घर में ले जाऊँगा। मैं ऐसा प्रबंध करूँगा कि पक्षियों को बंद घर से बाहर जाने और आने में सुविधा रहे । यदि उस घर में कोई अन्य परिवार आकर रहेगा तो मैं उनसे अनुरोध करूँगा कि वे उन पक्षियों के प्रति सहनशीलता और स्नेह का भाव रखें । उनको घर से बाहर न निकालें ।

भाषा की बात—

1. (1) उन्मुक्त गगन (2) कटुक निबौरी (3) नीले नभ।
2. (1) छिन्न-भिन्न = छिन्न और भिन्न
   (2) दिन-रात = दिन और रात (3) नर-नारी = नर और नारी (4) पशु-पक्षी = पशु और पक्षी (5) अन्न-जल = अन्न और जल (6) सीताराम = सीता और राम (7) बड़े-बूढ़े = बड़े और बूढ़े (8) ऊँचा-नीचा = ऊँचा और नीचा (9) राजा-रानी = राजा और रानी (10) शूर-वीर = शूर और वीर ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ग), 2. (घ), 3. (घ), 4. (घ), 5. (ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. सोने के पिंजरे में लगी सोने की शलाकाएँ जो पक्षी को बाहर आने से रोकती हैं, कनक- तीलियाँ कहलाती हैं।
2. पिंजरे में बंद रहने पर उनको न तो बहता हुआ जल मिलेगा न वृक्षों के ताजा फल मिलेंगे जो उन्हें बहुत पसंद हैं।
3. पिंजरों में बंद पक्षी वृक्षों की टहनियों पर झूलने के सपने ही देखते रहते हैं ।
4. अपनी चोंच लाल किरण के समान बता रहे हैं ।
5. पक्षी क्षितिज तक नहीं पहुँच सकते क्योंकि क्षितिज कोई वास्तविक वस्तु नहीं केवल दृष्टि का भ्रम मात्र है।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. पक्षियों को पिंजरों में बंद करके उनकी आजादी छीन ली गई है । अब वे आकाश में मनचाही उड़ान नहीं भर सकते । बहता जल नहीं पी सकते । पिंजरों बंद रहकर वे अपनी स्वाभाविक जिंदगी नहीं जी सकते । वृक्षों की टहनियों पर झूलना, नीले आकाश में दूर तक उड़ते चले जाना, ये सभी बातें उनके लिए अब सपना हो गई हैं ।
2. पक्षियों को पालने वाले लोग उनके लिए सुन्दर और मूल्यवान पिंजरे बनवाते हैं । उनको सोने-चाँदी के बर्तनों में स्वादिष्ट भोजन खिलाते हैं । शिकारी पशु-पक्षियों से उनकी रक्षा करते हैं। उनको गर्मी-सर्दी से बचाने का प्रबन्ध करते हैं।
3. पक्षियों को स्वतंत्र-जीवन प्रिय है। वे किसी भी बंधन में नहीं रहना चाहते। बहते जल से प्यास बुझाना । कड़वी निबौरियाँ खाना। मुक्त आकाश में मनचाही उड़ान भरना। यही जीवन उन्हें प्रिय लगता है । इसका कारण यही है कि हर प्राणी स्वतंत्र रहना चाहता है । स्वाधीनता से बढ़कर कोई सुख नहीं हो सकता।
4. इस कविता के द्वारा कवि ने पिंजरे में बंद पक्षियों की मनोभावनाओं को प्रकट किया है । पक्षी कभी नहीं चाहते कि उन्हें पिंजरों में बंद करके रखा जाय । भले ही पिंजरा सोने का बना हो । पिंजरों में बंद रहकर वे प्रसन्नता से गा नहीं सकते । पिंजरे से बाहर निकलने

को व्याकुल होकर वे पंख फड़फड़ाएँगे तो उनके पंख टूट जाएँगे ।

पक्षी बहती जलधाराओं का जल पीने वाले हैं। सोने की कटोरी में मैदा के बने पकवानों को खाने की जगह उन्हें नीम की कड़वी निबौरियाँ अच्छी लगती हैं । सोने का पिंजरा उन्हें सोने की जंजीर की तरह लगता है।

पक्षियों की इच्छा है कि वे खुले आकाश में मनचाही उड़ान भरें । उनको परतंत्रता में मिलने वाली सुख-सुविधाएँ नहीं चाहिए । चाहे उनको घोंसलों और वृक्षों की टहनियों से भी वंचित कर दिया जाय लेकिन उनकी उड़ान पर कोई बंधन न लगाया जाय ।

5. इस कविता में कवि ने पक्षियों की भावनाओं और इच्छाओं के द्वारा हमें परतंत्रता से मुक्त होकर स्वतंत्र जीवन जीने की प्रेरणा दी है । अपना स्वाभिमान खोकर दूसरों की अधीनता में जीना मनुष्य को शोभा नहीं देता । परतंत्र जीवन में चाहे कितनी भी सुख-सुविधाएँ क्यों न मिलें सब तुच्छ हैं । स्वतंत्र जीवन में चाहे कितने ही कष्ट क्यों न भोगने पड़ें वे परतंत्रता के सुखों से कहीं श्रेष्ठ हैं ।

परतंत्र व्यक्ति को अपने स्वामी की इच्छा के अनुसार रहना पड़ता है । उसकी सारी इच्छाएँ घुट-घुटकर मर जाती हैं । जब पशु-पक्षी भी बंधन में पड़कर रहना नहीं चाहते तो फिर मनुष्य के पराधीन होकर जीने को धिक्कार है।

कविता देशवासियों को स्वतंत्रता का संदेश देती है । पराधीनता से मुक्त होने की प्रेरणा देती है ।

**

पाठ-2 हिमालय की बेटियाँ

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

लेख से—

1. नागार्जुन नदियों को माता मानने के साथ-साथ उन्हें बेटियों, प्रेमिकाओं और बहनों के रूप में भी देखते हैं।
2. सिन्धु और ब्रह्मपुत्र हिमालय से निकलने वाले दो **महानद** हैं । इनका नाम सुनते ही रावी, चिनाब, झेलम, सतलुज, गंगा, यमुना, सरयू, गंडक आदि नदियों का स्मरण हो आना स्वाभाविक है । लेखक ने इन दोनों को हिमालय के हृदय से निकली करुणा की धाराएँ कहा है । दोनों को हिमालय की बेटियाँ बताते हुए लेखक ने समुद्र को इनका सौभाग्यशाली पति माना है ।
3. काका कालेलकर की नदियों के प्रति श्रद्धा-भावना थी। नदियाँ अपने जल से इस देश की प्रजा का माता के समान ही स्नेह से पालन करती आ रही हैं । प्यास बुझाने के साथ ही ये खेतों की सिंचाई करके जनता को अन्नदान भी करती हैं । अन्य अनेक रूपों में भी नदियाँ हमारे जीवन को सुखी बनाती हैं । अत: कालेलकर का उन्हें माता बताना सर्वथा उचित है ।
4. हिमालय की यात्रा में लेखक ने नदियों की सबसे अधिक प्रशंसा की है । इनमें भी सिंधु और ब्रह्मपुत्र का विशेष उल्लेख किया है । इसके साथ-साथ उसने हिमालय की एक दयालु पिता और पर्वतराज कहकर तथा समुद्र को हिमालय की बेटियों का सौभाग्यशाली पति बताकर प्रशंसा की है ।

लेख से आगे —

नोट — प्रश्न 1 परीक्षोपयोगी नहीं है ।

2. गोपालसिंह नेपाली की कविता 'हिमालय और हम', रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता 'हिमालय' तथा जयशंकर प्रसाद की कविता 'हिमालय के आँगन में' पढ़ी और इनकी आपस में तुलना की। हिमालय से संबंधित उपर्युक्त प्रसिद्ध कवियों की कविताएँ हिमालय का प्रकृति से जुड़ाव और उसकी महत्वपूर्ण विशेषताओं की ओर संकेत करती हैं। हिमालय का मानवीकरण करके उसकी उपयोगिता को समझाया गया है। मेरी दृष्टि में लेखक ने बिलकुल सही कहा है जिस प्रकार पिता पुत्रियों को जन्म देता है और वे पिता की गोद में खेलती हैं। ठीक उसी तरह नदियों का उद्‌भव भी हिमालय से हुआ है। ऐसी दशा में वे हिमालय की बेटियाँ ही तो हुईं। हम भी उन्हें हिमालय की बेटियाँ ही कहना चाहेंगे।

3. विगत वर्षों में नदियों के स्वरूप में अनेक बदलाव आए हैं । उस समय प्राय: सभी नदियों का जल स्वच्छ और पीने योग्य था । लेकिन इस बीच अधिकांश नदियों का जल प्रदूषित हो गया है । नगरों की गंदगी और कारखानों के हानिकारक तत्वों के मिलते रहने से नदियाँ गंदा नाला बन गई हैं ।

4. भारतीय पुराण ग्रन्थों में हिमालय को देवभूमि तथा देवताओं का निवास स्थल माना गया है। इसीलिए कालिदास ने हिमालय को 'देवात्मा' कहा है ।

अनुमान और कल्पना—

1. वर्तमान समय में नदियों की सुरक्षा एवं उन्हें पर्यावरण प्रदूषण से बचाने के लिए सरकारों द्वारा अनेक कदम उठाए गए हैं जिनमें 'नमामि गंगे' नामक एक परियोजना भी सम्मिलित है। आम जनता भी अब नदियों की सुरक्षा एवं संरक्षा हेतु जागरूक हो गई है। मेरे विचार में नदियों की सुरक्षा एवं संरक्षा हर हाल में होनी चाहिए।

2. **नदियों से लाभ**—नदियाँ प्रकृति का एक अभिन्न अंग हैं। रेगिस्तानों को छोड़कर विश्व का शायद ही कोई ऐसा भाग होगा जिसमें नदी न हो । नदियाँ प्राय: पर्वतों से या विशालकाय झील आदि जलाशयों से निकलती हैं । अनेक प्रदेशों से बहती हुई ये अंत में किसी अन्य नदी या समुद्र में जा मिलती हैं ।

   नदियों से मनुष्यों को अनेक लाभ हैं । पर्वतों में ये तीव्र प्रवाह के कारण जल विद्युत बनाने, चक्कियाँ चलाने में सहायता करती हैं । पर्वतों से नीचे तराई प्रदेश में जंगलों को घना और हरा-भरा बनाती हैं । मैदान में आने पर इनकी गति मंद और गहराई बढ़ जाती है । इनसे पशु, पक्षी, मनुष्य सभी की प्यास बुझाने के लिए जल मिलता है।

   नदियों से नहरें निकालकर खेतों की सिंचाई की जाती है । अनेक उद्योगों में नदियों का जल काम में आता है। नदी के समीप होने से नगरों और गाँवों में भूमि के अंदर जल का स्तर ठीक बना रहता है । हमारे देश में नदी किनारे बसे नगरों का महत्व प्राचीन समय से रहा है। हमारे अनेक तीर्थस्थल नदियों के तट पर स्थित हैं।

   हमारे देश में कई नदियाँ ऐसी हैं जिनके द्वारा व्यापार होता है। नावों और छोटे जलयानों द्वारा यात्रियों और माल का आवागमन होता है । इस प्रकार नदियों के अनेक लाभ हैं ।

भाषा की बात—

1. 1. लाल किरण-सी चोंच खोल।
   2. मुझे दादी माँ शापभ्रष्ट देवी-सी लगीं ।
   3. टहनी-टहनी में कंदुक सम झूले कदंब ।
   4. घुटनों पर पड़ी है नदी चादर सी ।
   5. इन्द्रधनुष के गुच्छे जैसे पंखों को।

2. (1) इनका उछलना और कूदना, खिलखिला कर लगातार हँसते जाना ।
   (2) कहाँ ये (नदियाँ) भागी जा रही हैं ?
   (3) बुड्ढा हिमालय अपनी इन नटखट बेटियों के लिए कितना सिर धुनता होगा ?
   (4) हिमालय को ससुर और समुद्र को उसका दामाद कहने में।

3.

विशेषण	**विशेष्य**	**विशेषण**	**विशेष्य**
संभ्रांत	महिला	चंचल	नदियाँ
समतल	आँगन	घना	जंगल
मूसलाधार	वर्षा		

4. (1) गंगा-यमुना (2) दुबली-पतली (3) माँ-बाप।

5. (1) धारा-राधा (व्यक्तिवाचक संज्ञा)
   (2) रस - सर (जातिवाचक संज्ञा)
   (3) कपट-टपक (भाववाचक संज्ञा)
   (4) सदा-दास (जातिवाचक संज्ञा)
   (5) नाच - चना (जातिवाचक संज्ञा)।

6. सतलुज - शतद्रुम रोपड़ - रूपपुर
   झेलम - वितस्ता चिनाब - विपाशा
   अजमेर - अजयमेरु बनारस - वाराणसी

7. (1) वह शायद ही मेरी मजबूरी को समझ सके ।
   अन्य रूप—वह शायद मेरी मजबूरी को नहीं समझ सके ।
   (2) उसका घर लौटकर आना शायद ही सम्भव है ।
   अन्य रूप—उसका घर लौटकर आना शायद सम्भव नहीं है।

(3) वह शायद ही अपना अपराध स्वीकार करेगा ।

अन्य रूप—वह शायद अपना अपराध स्वीकार नहीं करेगा।

दूसरे प्रकार के वाक्य—

(1) किसे नहीं पता कि वह एक कुशल गायक है?

अन्य रूप—सभी को पता है कि वह एक कुशल गायक है।

(2) कौन नहीं मानता कि ईश्वर सर्वव्यापक है ?

अन्य रूप—सभी मानते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापक है ।

(3) भारतीयों की प्रतिभा का लोहा कौन नहीं मानता?

अन्य रूप— भारतीयों की प्रतिभा का लोहा सभी मानते हैं ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ग), 2. (घ), 3. (घ), 4. (ग), 5. (ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. लेखक माँ और दादी तथा मौसी और मामी की गोद की भावना करके नदियों की धारा में डुबकी लगाता था ।
2. लेखक हिमालय में नदियों के दुबले, पतले रूप को देखकर हैरान हो जाता था । यह नदियाँ मैदानों में विशाल रूप हो जाती थीं।
3. मैदानों में जाकर नदियों का उछलना-कूदना, खिलखिलाकर हँसना, उनके चंचल हाव-भाव तथा उत्साह गायब हो जाते हैं ।
4. लेखक ने बरफ, नंगी पहाड़ियों, पौधों से भरी घाटियों, सुन्दर पठारों और हरी-भरी तराइयों को नदियों का लीला निकेतन बताया है ।
5. लेखक ने सिंधु और ब्रह्मपुत्र को हिमालय के दयालु हृदय की एक-एक बूँद का संचय माना है, जो न जाने कब से इकट्ठा होकर समुद्र की ओर बह रही हैं ।

लघूत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्नोत्तर

1. मैदानों में बहती नदियाँ लेखक को बड़ी गंभीर, शांत और अपने आप में खोई हुई संभ्रांत महिलाओं के समान प्रतीत होती थीं। उनके प्रति लेखक के मन में आदर और श्रद्धा की भावना थी । उनके जल में डुबकियाँ लगाना उसे माँ और दादी तथा मौसी और मामी की गोद में बैठने जैसा लगता था ।
2. हिमालय में पहुँचने पर लेखक ने नदियों को अन्य ही रूप में देखा । मैदानों में गंभीर और शांत संभ्रांत महिला जैसी लगने वाली नदियाँ हिमालय में दुबली-पतली, उछलती-कूदती, खिलखिलाती बालिकाओं जैसी लगीं। उनके इस रूप को देखकर लेखक चकित हो गया।
3. हिमालय में ये नदियाँ बरफ, नंगी पहाड़ियों, पौधों से भरी घाटियों, पठारों, तराई प्रदेशों में प्रवाहित हो रही हैं। आगे चलने पर ये वृक्षों से भरे जंगलों में होकर बहती हैं।
4. लेखक कहता है कि सिंधु और ब्रह्मपुत्र के साथ हिमालय से निकलने वाली अनेक नदियों का ध्यान आ जाता है। रावी, सतलुज, व्यास, गंगा, यमुना, सरयू, गंडक आदि सभी हिमालय की बेटियाँ जैसी हैं । सिंधु और ब्रह्मपुत्र तो हिमालय के द्रवित हुए हृदय की सदियों से इकट्ठा हुई बूँदें हैं । लेखक समुद्र को पर्वतराज हिमालय की इन दो बेटियों का पति बताता है।
5. इस पाठ में नदियों को कई मानवी रूपों में देखा गया है। काका कालेलकर नदियों को लोकमाता मानते हैं । कवि कालिदास ने उन्हें प्रेयसी माना है तथा स्वयं लेखक उन्हें बेटी और बहन के रूप में देखता है ।
6. लेखक ने इस पाठ में नदियों के स्वरूप और व्यवहार का भावना प्रधान शैली में परिचय कराया है । मैदानी क्षेत्रों में ये नदियाँ बड़ी गंभीर, शांत और अपने आप में खोई-सी लगती हैं । उनका स्वरूप एक संभ्रांत महिला जैसा होता है । नदियों के इस स्वरूप को देखकर उनमें माता जैसी श्रद्धा उत्पन्न होती है ।

   हिमालय प्रदेश में जाने पर ये ही नदियाँ कुछ और स्वरूप में दिखाई पड़ती हैं । ये दुबली-पतली, उछलती-कूदतीं, खिलखिलाकर हँसतीं और उत्साह से प्रवाहित होती चंचल बालिकाओं जैसी प्रतीत होती हैं। ऐसा लगता है कि ये नदियाँ हिमालय की स्नेहमयी गोद से निकलकर भागी जा रही हैं । बरफ, नंगी पहाड़ियों, घाटियों, पठारों और तराई क्षेत्र में होकर बहती हुई ये वृक्षों से भरे जंगलों में जा पहुँचती हैं । ये आपस में मिलती हुई अंत में समुद्र में जा मिलती हैं । लेखक ने उनका माता, बेटी, बहन और प्रेयसी के रूप में वर्णन किया है ।

**

पाठ-3 कठपुतली

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कविता से—

1. कठपुतली के अंग-अंग में पराधीनता के धागे बँधे हुए थे जिनका संचालन पराये हाथों में था । वह अपनी इच्छा से कुछ भी नहीं कर सकती थी । अपनी ऐसी दयनीय दशा देखकर कठपुतली को गुस्सा आ गया ।
2. कठपुतली स्वतंत्र होना चाहती है । वह स्वावलम्बी बनना चाहती है लेकिन स्वतंत्रता के साथ आने वाली जिम्मेदारी और अपनी क्षमता के बारे में सोचकर वह झिझकती है । अपने पैरों पर खड़े होने का तात्पर्य है— आत्मनिर्भर होना । किसी की सहायता की अपेक्षा न करना । कठपुतली बिना दूसरे की सहायता के हिल-डुल भी नहीं सकती ।
3. पहली कठपुतली ने पराधीनता के बंधनों से मुक्त होकर अपने बल पर जीने की इच्छा व्यक्त की थी । दूसरी कठपुतलियाँ भी पराधीनता का कष्ट भोग रही थीं । वे अपने मन की इच्छा के अनुसार जीवन नहीं बिता पा रही थीं। इसलिए पहली कठपुतली की बात उनको अच्छी लगी।
4. दूसरी कठपुतलियों द्वारा भी स्वतंत्र होने की इच्छा प्रकट किए जाने पर पहली कठपुतली सोच में पड़ गई। शायद वह सोचने लगी कि क्या वह दूसरी कठपुतलियों की जिम्मेदारी उठा पाएगी? स्वतन्त्र रहना तो हर व्यक्ति चाहता है, लेकिन जब पहली कठपुतली पर सबकी स्वतन्त्रता की जिम्मेदारी आती है तो वह इतनी बड़ी और बिल्कुल नयी जिम्मेदारी उठाने से डर जाती है । इसलिये वह सोचती है कि यह कैसी इच्छा मेरे मन में जगी ?

कविता से आगे—

1. इस पंक्ति का अर्थ यही है कि हमें मनचाहे ढंग से जीने का अर्थात् स्वतंत्र जीवन बिताने का अवसर नहीं मिला।
2. सन् 1857 के दो स्वतंत्रता-सेनानी—
   (1) झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई
   (2) ताँत्या टोपे।

   सन् 1942 के दो स्वतंत्रता सेनानी—
   (1) महात्मा गांधी
   (2) सुभाषचन्द्र बोस

अनुमान और कल्पना—

काठ की पुतलियों द्वारा स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया जाना एक रोचक कल्पना हो सकती है । संभव है कि उन्होंने अपना एक संगठन बनाया हो और सत्याग्रह का सहारा लिया हो । सारी कठपुतलियों ने धागों के संकेत पर संचालित होने से इन्कार कर दिया हो और नचाने वालों को उन्हें स्वतंत्र कर देना पड़ा हो । फिर से पराधीनता के बंधन में न पड़ जाएँ, इस भय से कठपुतलियाँ भाग निकली हों और कहीं दूर अपनी बस्ती बसाई हो ।

भाषा की बात —

1. हथफूल, हथकंडा, हथगोला, सोनजुही, सोन मक्खी, सोन परी, मटमैला, मटका, मटमूरत।
2. पतला-दुबला, उधर-इधर, नीचे-ऊपर, बाएँ-दाएँ, काला-गोरा, पीला-लाल ।

   अन्य जोड़े—उलटा-सीधा = सीधा-उलटा, देर-सबेर = सबेर-देर, सदी-गर्मी = गर्मी-सर्दी ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ख), 2. (क), 3. (ग), 4. (घ)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. उसने कहा कि उसे आगे-पीछे से बाँधने वाले धागों को तोड़ दिया जाय और उसे अपने पैरों पर खड़े होने को छोड़ दिया जाय ।
2. अन्य कठपुतलियों ने पहली कठपुतली की बात का समर्थन किया और कहा कि उन्हें मनचाहा जीवन न जी पाते हुए बहुत समय बीत गया है ।
3. उसमें आत्मविश्वास की कमी थी । अत: वह आगे कदम बढ़ाने में हिचक रही थी ।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. संसार का हर जीव स्वतंत्र रहना चाहता है । किसी और के इशारे एवं इच्छा पर जीवन बिताना अपमानजनक

लगता है । कठपुतली तो एक काठ की बनी निर्जीव पुतली है । मगर उसे भी बंधन में रहना स्वीकार नहीं । वह भी स्वतंत्र होना चाहती है । अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है। लेकिन स्वतंत्र होने के लिए स्वावलंबी होना बहुत आवश्यक है। क्या वह अपने पैरों पर खड़ी हो पाएगी ? क्या वह स्वतंत्र होने पर आने वाली चुनौतियों का सामना कर पाएगी? ये सारी शंकाएँ उसको चिंतित कर देती हैं ।

2. दूसरी कठपुतलियों ने पहली कठपुतली का समर्थन किया और यह भी कहा कि वे अपना मनभाया जीवन जीना चाहती हैं । यह सुनकर पहली कठपुतली सोचने लगी कि क्या स्वतंत्र होने की इच्छा प्रकट करके उसने ठीक किया है ? क्या वह अन्य कठपुतलियों की स्वतंत्रता और स्वावलम्बन की जिम्मेदारी निभा सकेगी? वह स्वयं स्वावलम्बी और स्वतंत्र कैसे हो पाएगी ? इन सारी बातों के ध्यान में आने पर उसका उत्साह ठंडा पड़ गया ।

3. कठपुतलियाँ लकड़ी की बनी निर्जीव मूर्तियाँ हैं । उनका जीवन दूसरों पर आश्रित है । उनका उठना-बैठना, चलना-फिरना सब कुछ उन धागों पर आधारित है जो कठपुतली को पराधीनता के बंधन लगते हैं । एक निर्जीव पुतली में अपनी बुद्धि और भावना कैसे हो सकती है । वह आजादी और पराधीनता का भेद कैसे समझ सकती है ? लेखक ने कठपुतलियों को केवल एक प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है ।

कठपुतलियों के द्वारा कवि उन लोगों को स्वतंत्रता और स्वावलंबन का संदेश देना चाहता है जो अपना स्वाभिमान भूलकर दूसरों के इशारों पर नाचते हैं। जब एक कठपुतली भी परतंत्रता के बंधनों से आजाद होने के लिए विद्रोह कर सकती है तो फिर बुद्धि, विवेक और भावनाओं से युक्त मनुष्य का पराधीन होकर जीना बड़ी लज्जा की बात है । इस प्रकार कवि ने हमें स्वाधीनता और स्वाभिमान के साथ जीने का संदेश दिया है ।

**

पाठ-4 मिठाईवाला

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कहानी से—

1. मिठाईवाला कोई पेशेवर फेरीवाला नहीं था । वह तो मन के संतोष के लिए वस्तुएँ बेचता था । बच्चों को प्रसन्न करने के लिए वह अलग-अलग चीजें बेचा करता था। इस काम से उसे बच्चों का साथ मिलता था। उनसे बातें करने और उन्हें खुश देखने में उसे बड़ा सुख मिलता था । वह निरंतर दूर-दूर घूमते हुए चीजें बेचता था । इसलिए वह महीनों बाद दोबारा आता था।

2. मिठाईवाला फेरी लगाते समय बड़े मधुर स्वर और लय में आवाज लगाता था । वह बच्चों से बड़े प्यार से बातें करता था । वह सामान बड़े सस्ते भाव में बेचता था । यही कारण था कि बच्चे और बड़े सभी उसकी ओर खिंचे चले आते थे ।

3. विक्रेता और ग्राहक के बीच मोल-भाव होना एक स्वाभाविक परंपरा है । विजय बाबू ने मुरलीवाले से भाव पूछा । उसने सीधा उत्तर न देकर कहा कि वैसे तो वह तीन-तीन पैसे में बेच रहा है लेकिन उनको दो पैसे में दे देगा। विजय बाबू ने इसे विक्रेताओं की चतुराई की आदत मानकर उससे कहा कि विक्रेताओं को झूठ बोलने की आदत होती है । ग्राहक पर अहसान जताने को भाव कम करने का नाटक करते हैं । इससे मुरलीवाले को धक्का-सा लगा और उसने कहा कि ग्राहकों को यही लगता है दुकानदार उन्हें लूट रहा है। इस प्रकार तर्क-वितर्क के बाद दो-दो पैसे में दोनों पक्ष राजी हो गए ।

4. खिलौनेवाले की आवाज सुनते ही बच्चों पर जादू-सा हो जाता था । वे गलियों और बगीचों में खेलना छोड़कर खिलौनेवाले की ओर दौड़ पड़ते थे और उसे झुंड में घेरकर खिलौने माँगने लगते थे । अपनी तोतली बोली में खिलौनों का मोल-भाव करते थे । खिलौने पाकर वे प्रसन्नता से उछलने-कूदने लगते थे।

5. खिलौनेवाला महीनों तक गायब रहा । फिर एक दिन एक मुरलीवाले ने आकर आवाज लगाई - 'बच्चों को बहलाने वाला, मुरलियावाला' । मुरलीवाले का स्वर सुनते ही रोहिणी को खिलौनेवाले की याद आ गई।

वह भी इसी तरह मधुर आवाज में खिलौने बेचा करता था । दोनों का स्वर और लहजा एक जैसा था ।

6. रोहिणी की बात सुनकर मिठाईवाला भावुक हो गया। उसने बताया कि वह पहले खिलौने और मुरली लेकर आ चुका था। उसने रोहिणी के पूछने पर बताया कि उन व्यवसायों में उसे नाममात्र का लाभ होता है । कभी नहीं भी होता । केवल बच्चों के साथ मन बहलाने को वह वस्तुएँ बेचता फिरता है ।

7. रोहिणी ने ही पहली बार उससे सहानुभूति जताई थी और उसकी दुखद कहानी सुनी थी। अत: उसके बच्चों के प्रति खिलौनेवाले के मन में प्यार उमड़ उठा । इसीलिए उसने उनसे मिठाई के पैसे नहीं लिए ।

8. आजकल किसी विरले ही घर की औरतें चिक के पीछे से बातें करती हैं । अब प्राय: स्त्रियाँ खुले में आकर बातें करती हैं । बाजार से सामान खरीद कर लाती हैं । चिक के पीछे से बातें करना परदा-प्रथा का ही एक रूप है। आजकल ग्रामीण या पिछड़े तबके की स्त्रियाँ ही परदा करती हैं । परदा स्त्रियों के लिए बहुत असुविधाजनक और अविश्वास का प्रतीक है ।

कहानी से आगे—

नोट — प्रश्न 1 व 3 परीक्षोपयोगी नहीं हैं ।

2. हाटों, मेलों, शादियों में अनेक प्रकार की वस्तुएँ सामने आती हैं । दैनिक उपयोग की चीजों के अतिरिक्त कपड़ों, खाने-पीने की वस्तुओं तथा शृंगार आदि के सामान की दुकानें सजाई जाती हैं । मुझे खाने-पीने की वस्तुएँ सबसे अधिक आकर्षित करती हैं । शादियों में भी मैं मिठाइयों पर ही ध्यान देता हूँ । इन वस्तुओं को बनाने और सजाने में दुकानदारों और कारीगरों का हाथ होता है ।

अनुमान और कल्पना—

नोट — प्रश्न 1 व 2 परीक्षोपयोगी नहीं हैं।

3. यह सच है कि समय के साथ फेरी के स्वरों में काफी कमी आई है । इसके अनेक कारण हो सकते हैं । पहला कारण तो लोगों की रुचियाँ बदलना है । मध्यम और उच्च वर्ग के लोग फेरीवालों से वस्तुएँ खरीदना अच्छा नहीं समझते । बाजार में ढेरों आकर्षक और उपयोगी वस्तुएँ आ गई हैं । पैसा बढ़ना भी इसका एक कारण है । शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, महँगाई, प्रतियोगिता बढ़ जाना आदि अन्य कारण हैं ।

भाषा की बात—

1. **(क)** 'मिठाईवाला' में 'मिठाई' जातिवाचक संज्ञा है तथा 'बोलनेवाली गुड़िया' में 'बोलनेवाली' विशेषण है ।

   (ख) ऊपर लिखे वाक्यांशों में उनका प्रयोग संज्ञा और कुर्त्ता बनाने के रूप में है ।

   नोट — प्रश्न 2 परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है।

3. ''लगता है, वे भी पार्क में खेलने चले गए हैं।''

   ''भैया, यह मुरली कितने की है?''

   ''दादी, चुन्नू-मुन्नू के लिए मिठाई लेनी है। ज़रा मिठाईवाले को कमरे में बुलवाओ।''

कुछ करने को —

नोट — प्रश्न 1, 2 व 3 परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं हैं।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ग), 2. (घ), 3. (ग), 4. (घ), 5. (ग)।

अतिलघूत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. खिलौनेवाले की आवाज में विचित्रता, मादकता और मधुरता होती थी । उसका स्वर सुनने वालों को बेचैन कर देता था ।

2. रोहिणी सोचने लगी कि खिलौनेवाला इतने सस्ते खिलौने कैसे दे गया ।

3. नागरिक ने बताया कि मुरलीवाले की आयु तीस-बत्तीस वर्ष के लगभग थी । वह दुबला-पतला गोरा युवक था। वह सिर पर बीकानेरी रंगीन साफा बाँधता था ।

4. मुरलीवाले की आवाज सुनते ही बच्चे खेलना छोड़कर दौड़ पड़े । किसी की टोपी गिर गई। किसी का जूता पार्क में छूट गया, किसी का पाजामा ढीला होकर लटक आया । बच्चे मुरली लेने को शोर मचाने लगे ।

5. मुरलीवाला बड़े प्यार से बच्चों को मुरली बेचता था । सबको संतुष्ट कर देता था । यदि किसी बच्चे के पास पैसे नहीं होते तो उसे भी मुरली दे दिया करता था ।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. जब खिलौनेवाला अपने प्यार में भीगे कंठ से आवाज लगाता था तो पास के मकानों में हलचल मच जाती थी । युवतियाँ छोटे बच्चों को गोद में लिए छज्जों से झाँकने लगती थीं। बच्चों का झुंड खिलौनेवाले को घेर लेता था।
2. विजय बाबू ने मुरलीवाले से मुरली का दाम पूछा तो मुरलीवाले ने कहा कि वैसे तो एक मुरली तीन पैसे की है, पर वह उनको दो पैसे में दे देगा । यह सुनकर विजय बाबू ने कहा कि फेरी वालों की झूठ बोलने की आदत होती है । वह देता तो सभी को दो-दो पैसों में ही होगा लेकिन उन पर अहसान लाद रहा था । यह सुनकर मुरलीवाले ने कहा कि ग्राहकों का यह स्वभाव होता है कि वे सस्ता बेचने पर भी दुकानदार को लूटने वाला ही समझते हैं।
3. मुरलीवाला बच्चों से बड़ी प्यार भरी बातें कर रहा था। सभी बच्चों को उनकी पसंद की मुरली दे रहा था। उसकी बातें सुनकर रोहिणी सोचने लगी कि बच्चों से इतने प्यार से बातें करने वाला कोई फेरीवाला अब तक नहीं आया। यह सौदा भी बड़ा सस्ता बेचता है । भला आदमी लगता है ।
4. मुरलीवाले ने बताया कि वह भी अपने नगर का एक प्रतिष्ठित व धनी आदमी था। उसके पास मकान, व्यवसाय, घोड़ा-गाड़ी, नौकर-चाकर सब कुछ था । उसकी पत्नी बड़ी सुन्दर थी। उसके दो छोटे-छोटे बच्चे थे जो जीते-जागते सोने के खिलौने जैसे लगते थे। लेकिन समय का खेल है कि अब कोई भी नहीं है । अगर वह घर में पड़ा रहता तो घुल-घुलकर मर जाता । इस फेरी के धन्धे के बहाने वह अपने बच्चों को इन बच्चों में खोजता फिरता है । इन बच्चों में उसे अपने बच्चों की झलक मिल जाती है । पैसों की उसके पास कोई कमी नहीं है लेकिन जो उसके पास नहीं है उसे वह फेरी के धन्धे से पा लेता है ।

**

पाठ-5 पापा खो गए

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

नाटक से –

1. हमको नाटक में सबसे बुद्धिमान पात्र कौआ लगता है । उसी की तरकीब से लड़की को उठाकर लाने वाला डर कर भाग जाता है । वही लड़की को घर पहुँचाने के कई उपाय सुझाता है । सब उसी के सुझाव पर काम करते हैं ।
2. खंभा घमंडी स्वभाव का था । वह पेड़ से बात भी नहीं करता था । एक बार आँधी-पानी में खंभा उखड़कर गिरा तो पेड़ ने उसे सँभाला । इस घटना से खंभे का घमंड दूर हो गया और उन दोनों में दोस्ती हो गई ।
3. लैटरबॉक्स का रंग लाल था । वह बड़ों जैसी समझदारी की बातें करता था । इसलिए सब उसे लाल ताऊ कहकर पुकारा करते थे ।
4. लैटरबॉक्स अनेक बातों में अन्य पात्रों से भिन्न दिखाई देता है । उसका व्यक्तित्व घर के बड़े-बूढ़े के समान है । वह पढ़ना और गाना भी जानता है । उसे लड़की की सबसे अधिक चिन्ता रहती है । वह उसे बहलाता और धीरज बँधाता है । उसके बड़प्पन और गंभीर स्वभाव के कारण सब उसे लाल ताऊ कहकर पुकारते हैं ।
5. नाटक के सजीव पात्रों में एक कौआ है । बच्ची को बचाने में उसका महत्वपूर्ण योगदान है । जब बच्ची को उठाकर लाने वाला लौटकर आता है तो सब पात्र घबरा जाते हैं । किसी को बच्ची के बचाने का उपाय नहीं सूझता तब कौआ ही 'भूत-भूत' चिल्लाकर उस दुष्ट को डरा देता है और वह भाग जाता है । कौआ ही बच्ची को उसके घर पहुँचाने की तरकीबें सुझाता है । उसके संवाद, लैटरबॉक्स के साथ मजाक आदि मजेदार लगते हैं ।
6. लड़की बहुत छोटी थी । उसे अपने पिता का नाम भी पता नहीं था । लैटरबॉक्स ने उसके घर का पता जानने के लिए बहुत प्रयत्न किए लेकिन वह घर का सही पता नहीं बता सकी। इसी कारण सभी पात्र मिलकर भी उसे उसके घर नहीं पहुँचा पा रहे थे।

नाटक से आगे —

1. **नोट** —प्रश्न 1 परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है।
2. इस नाटक की सबसे अधिक मार्मिक घटना लड़की को उसके पापा से अलग किया जाना है । लड़की के आने के बाद सभी पात्रों की चिंता लड़की को उसके पापा के पास पहुँचाना ही हो जाती है । नाटक का अंत भी दर्शकों से लड़की के पापा को मिलाने की अपील के साथ होता है । अत: इस नाटक का शीर्षक 'पापा खो गए' सर्वथा उपयुक्त है ।
3. नाटक के आधार पर तो नाटक में दिखाया गया बच्ची के पापा को खोजने का तरीका ही उपयुक्त प्रतीत होता है क्योंकि नाटक के पात्र स्वयं कहीं जाकर बच्ची के पिता की खोज नहीं कर सकते। इसके अतिरिक्त हम बच्ची के पापा को खोजने के अन्य तरीके भी अपना सकते हैं। जैसे—लाउडस्पीकर द्वारा सूचना देना, अखबारों, दूरदर्शन पर प्रसारित करके, पुलिस में रिपोर्ट करके बच्ची को उसके पापा तक पहुँचा सकते हैं।

अनुमान और कल्पना —

1. नाटक में चोर ने बताया है कि वह बच्ची को एक घर से उठाकर लाया था । वह उस समय सो रही थी । चोर ने उसे बेहोशी की दवा दे दी थी । अत: अन्य कोई अनुमान लगाने की आवश्यकता ही नहीं है ।
2. उपाय बच्चों की आयु के आधार पर अलग-अलग हो सकते हैं । नाटक की बच्ची बहुत छोटी है वह अपने पापा का नाम तक नहीं जानती । इस आयु के बच्चे स्वयं कुछ अधिक नहीं कर सकते । माता-पिता उन्हें इतना सिखा सकते हैं कि वे अपरिचित व्यक्तियों से अधिक बात न करें, उनसे काई वस्तु न लें । किसी अपरिचित व्यक्ति द्वारा उठाने की कोशिश किए जाने पर घर के किसी व्यक्ति को पुकारें ।

अन्य उपाय—

- समझदार बच्चे माता-पिता से पूछे बिना किसी व्यक्ति के साथ अकेले न जायें चाहे वह परिचित ही क्यों न हो।
- परिचित व्यक्ति से खाने-पीने की कोई वस्तु ग्रहण नकरें।
- विद्यालय से सीधे घर लौट कर आएँ ।
- किसी अपरिचित व्यक्ति के वाहन पर ले चलने की बात स्वीकार न करें।

भाषा की बात—

1. मंच पर रात का दृश्य दिखाने के लिए हम मंच पर बहुत कम प्रकाश कर देंगे । परदों की सहायता से नकली तारे और चंद्रमा दिखा सकते हैं । दूर से चौकीदार की आवाज सुनवा सकते हैं, जैसे- जागते रहो । मंच पर स्थित पात्रों से रात होने की बात कहलवा सकते हैं।
2. मुझ पर भी एक रात आसमान से गड़गड़ाती बिजली आकर पड़ी थी । अरे, बाप रे ! वो बिजली थी या आफ़त ! याद आते ही अब भी दिल धक-धक करने लगता है और बिजली जहाँ गिरी थी वहाँ खड्डा कितना गहरा पड़ गया था, खंभे महाराज ! अब जब कभी बारिश होती है तो मुझे उसी रात की याद हो आती है। अंग थर-थर काँपने लगते हैं।
3. एक नमूने का संवाद दिया जा रहा है । शेष छात्र स्वयं लिखें ।

चॉक का ब्लैक बोर्ड से संवाद

ब्लैक बोर्ड—(चॉक से) कहो भई गोरे-चिट्टे! क्या हाल है?

चॉक—कहो भाई श्याम सलोने ! क्या हो रहा है ?

ब्लैक बोर्ड—होना क्या है । आज स्कूल की छुट्टी है । आज तुम्हारी घिस-घिस से पीछा छूटा है ।

चॉक—मेरी घिस-घिस से ही तुम्हारी पूछ हो रही है । वरना तुम्हारी कब की छुट्टी हो गई होती ।

ब्लैक बोर्ड—अरे! चुप भी रह! बित्ते भर की काया और हाथ भर की जबान! मैं नहीं होता तो तुझे कौन पूछता? डिब्बे में बंद पड़ा रहता।

चॉक—बस-बस ज्यादा न बोल । अपने लम्बे चौड़े, काले- कलूटे शरीर से सारी दीवार का रूप बिगाड़ रहा है । मेरे बिना पढ़ाई पूरी नहीं हो पाती ।

ब्लैक बोर्ड—तेरे बिना ! अरे मेरे बिना विज्ञान और गणित समझ में ही नहीं आते ।

चॉक—(कुछ सोचकर) ठीक कहते हो भाई! हम दोनों को ही एक-दूसरे की जरूरत है ।

4. परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (घ), 2. (ग), 3. (घ), 4. (घ), 5. (ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. बरसात की रातों में वह रातभर भीगता रहता था, तेज बौछारों की चोटें सहता था और तेज हवाओं में भी बल्ब को कसकर थामे हुए एक टाँग पर खड़ा रहता था ।
2. खंभे का तन-मन लोहे का था । इसीलिए उस पर किसी मौसम का असर नहीं होता था।
3. आरम्भ में खंभा पेड़ से बात तक नहीं करता था। एक दिन जोर की आँधी में खंभा पेड़ पर जा गिरा । पेड़ ने उसे सँभाल लिया और अपनी चोट की परवाह नहीं की । तभी से खंभे और पेड़ की दोस्ती हो गई ।
4. परीक्षित के पिता को लिखे हैडमास्टर के पत्र को पढ़कर लैटरबॉक्स को परीक्षित जैसे छात्रों पर बड़ा गुस्सा आया । यदि वह हैडमास्टर होता तो परीक्षित के होश ठिकाने लगा देता ।
5. लैटरबॉक्स ने कहा कि वह किसी की चिट्ठी अपने पास नहीं रख लेता है । किसी की गुप्त बातें भी वह अपने तक ही रखता है प्रकट नहीं होने देता । अब अगर वह दूसरों की दो-चार चिट्ठियाँ पढ़ भी लेता है तो क्या हो गया ?

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. एक वर्षा की रात में आकाश से गर्जन करती बिजली पेड़ पर आ गिरी थी। बिजली गिरने से वहाँ एक बड़ा गड्ढा हो गया था । अब जब कभी बारिश होती थी तो पेड़ को उस रात की वह भयंकर घटना याद आ जाती थी और उसका शरीर डर के मारे थर-थर काँपने लगता था । उसका दिल भी घबराहट से धक-धक करने लगता था ।
2. पेड़ जहाँ खड़ा था वहीं पर उसका जन्म हुआ था । उस समय वहाँ से कुछ दूरी पर ऊँचे-ऊँचे घर नहीं थे, न सड़क थी न सिनेमा का वह बड़ा पोस्टर था जिसमें नाचने वाली औरत बनी हुई थी । उस समय सामने केवल समुद्र था । उस समय पेड़ को बहुत अकेलापन महसूस होता था ।
3. लैटरबॉक्स ने जो पत्र पढ़ा वह हैडमास्टर द्वारा छात्र परीक्षित के पिता गोविंद राव को लिखा गया था । उसमें हैडमास्टर ने लिखा था कि उनका पुत्र परीक्षित पढ़ाई में बहुत कमजोर था । वह क्लास से गायब रहकर बंटे खेला करता था । हैडमास्टर ने परीक्षित के पिता से कहा था कि वह आकर उससे मिल लें ।
4. नाटक में लैटरबॉक्स लड़की के बारे में सबसे अधिक चिंतित दिखाई देता है । पहले वह उस दुष्ट व्यक्ति से लड़की को बचाने के बारे में चिंतित रहता है । वह अपनी बातों से लड़की की घबराहट दूर करता है । लड़की को उठाकर लाने वाले आदमी को डराकर भगाने में वह भी साथ देता है । जब लड़की छिप जाती है तो वह बड़ा निराश और दुखी हो जाता है । अत में वही दर्शकों से लड़की के पापा को खोज लाने का आग्रह करता है ।
5. कौए ने पेड़ से कहा कि सवेरा होने पर वह अपनी घनी छाया लड़की के ऊपर करता रहे। इससे लड़की आराम से देर तक सोती रहेगी । उसने खंभे से कहा कि वह जरा टेढ़ा होकर खड़ा रहे । इससे पुलिस को लगेगा कि वहाँ कोई दुर्घटना हुई है और पुलिस वहाँ आएगी । आने पर वह लड़की को देखेगी तो उसके घर का पता लगाएगी । पुलिस खोए हुए बच्चों को उनके घर तक पहुँचाती है । कौए ने कहा कि वह जोर-जोर से काँव-काँव करके लोगों का ध्यान इधर खींचेगा । उसने लैटरबॉक्स से 'पापा खो गए हैं' यह लिखा हुआ पोस्टर बनवाया और उसके द्वारा दर्शकों से आग्रह कराया कि वे लड़की के पापा को खोजने में मदद करें ।

**

पाठ-6 शाम-एक किसान

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कविता से —

1. दूसरी एकरूपता सूरज और चिलम (सूरज की चिलम) में दिखाई गई है। चौथी एकरूपता पलाश के जंगल और अँगीठी (पलाश के जंगल की अंगीठी) में दिखाई गई है तथा पाँचवीं एकरूपता अंधकार और भेड़ों के गल्ले (भेड़ों के गल्ले सा) में दिखाई गई है ।
2. **(क)** शाम सूरज के पश्चिम क्षितिज पर पहुँचने पर शुरू हुई ।

   (ख) तब से लेकर सूरज डूबने में लगभग आधे घण्टे का समय लगा ।

   (ग) इस बीच आसमान में कई दृश्य बदले । सूरज के पश्चिम क्षितिज पर पहुँचते ही आकाश पीले-लाल प्रकाश से युक्त हो गया। पूर्व से पश्चिम की ओर जाते पक्षियों के समूह कलरव करते हुए दिखाई देने लगे । सूरज के डूबते ही पूर्व दिशा में हलका अँधेरा दिखाई देने लगा । धीरे-धीरे सारे आकाश में अंधकार छा गया ।
3. परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं ।

कविता से आगे—

1. इस कविता को चित्रित करने के लिए नीले, काले, पीले, नारंगी, लाल और हरे आदि रंगों की आवश्यकता होगी ।
2. परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं ।
3. पंत जी की कविता और सर्वेश्वर दयाल जी की कविता में मुख्य अंतर यह है कि पंत जी ने शाम के दृश्य का स्वाभाविक या यथार्थ वर्णन किया है, जबकि सर्वेश्वर दयाल ने रूपक और उपमाओं के द्वारा वर्णन किया है।

अनुमान और कल्पना—

नोट—अध्यापक महोदय की सहायता से छात्र स्वयं करें।

भाषा की बात—

1. इन पंक्तियों में सा/सी का प्रयोग संज्ञा तथा विशेषण शब्दों के साथ हो रहा है ।

   चादर, गल्ले, परदा — संज्ञा शब्द ।

   मरियल, छोटा, नन्हीं— विशेषण शब्द ।
2. **औंधी**— (1) कढ़ाई औंधी पड़ी हुई है ।

   (2) कमल औंधी खोपड़ी का आदमी है ।

   दहक—(1) हवा चलते ही आग दहक उठी।

   (2) जादूगर दहक रहे कोयलों पर नंगे पैर चला ।

   सिमटा—(1) वह कोने में सिमटा-सा खड़ा था ।

   (2) कालीन उधर सिमटा हुआ है जरा सही कर दो ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ख), 2. (घ), 3. (क), 4. (ग), 5. (घ)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. कवि ने शाम को एक किसान का रूप दिया है।
2. कवि ने पहाड़ को एक साफा बाँधे बैठे किसान के रूप में चित्रित किया है।
3. कवि ने पूर्व में स्थित अंधकार को भेड़ों के समूह के समान बताया है।
4. सूरज को कवि ने एक दहकते अंगारों से युक्त चिलम के समान बताया है जिसे पहाड़रूपी किसान पी रहा है।

लघूत्तरात्मक निबंधात्मक प्रश्नोत्तर

1. उस शांत-एकांत वातावरण में मोर की बोली ऐसी लगी जैसे किसी ने कहा हो - 'सुनते हो' । लगा जैसे किसी ने किसान को पुकारा हो । किसान ने अपनी चिलम औंधी कर दी अर्थात् सूरज डूब गया । चारों ओर अंधकार छा गया ।
2. कवि ने एक सामान्य भारतीय किसान की वेश-भूषा और विश्राम के क्षणों में उसके क्रिया-कलाप को शाम के दृश्य में साकार किया है । पहाड़ एक किसान है । उसने सिर पर आकाश रूपी साफा बाँध रखा है । वह डूबते सूरज की लाल-लाल छवि रूपी चिलम से कश खींच रहा है । पास ही पलाश के जंगल में खिले लाल

फूल एक दहकती अँगीठी के समान हैं जिससे वह ताप रहा है । उसके घुटनों पर नदीरूपी चादर पड़ी है ।

मोर बोलने के साथ ही किसान चौंक उठता है। वह चिलम को उलट देता है यानी सूरज डूब जाता है । उलटी गई चिलम में से धुआँ उठता है अर्थात् सूरज डूबने के साथ कुछ धुँधलका होता है और फिर अंधकार छा जाता है मानो चिलम बुझ जाती है ।

**

पाठ-7 अपूर्व अनुभव

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

पाठ से—

1. यासुकी-चान को पोलियो था, इसलिए वह किसी पेड़ पर नहीं चढ़ पाता था । इसी कारण वह और बच्चों की तरह किसी पेड़ को अपनी संपत्ति नहीं मानता था । तोत्तो-चान को यासुकी-चान से इसी कारण सहानुभूति थी। इसीलिए उसने यासुकी-चान को अपने पेड़ पर चढ़ने में पूरी मदद की।
2. दोनों बच्चों ने खतरा उठाते हुए कठिन प्रयत्न करके, अपने काम में सफलता पाई थी । अत: दोनों बहुत खुश थे । इस सफलता से दोनों को नए अनुभव प्राप्त हुए थे । तोत्तो-चान को अपनी योजना में सफल होने पर अपूर्व आनंद का अनुभव हो रहा था और यासुकी-चान ने पेड़ पर चढ़कर दुनिया की एक नई झलक देखी थी । पेड़ पर चढ़ना क्या होता है यह पहली बार उसकी समझ में आया था । तोत्तो-चान को अपने असमर्थ साथी की सहायता करने पर गर्व और संतोष का अनुभव हो रहा था ।
3. जब तोत्तो-चान ने यासुकी-चान से तिपाई सीढ़ी पर चढ़ने को कहा तो उस समय दोनों ही कड़कती धूप के पड़ने से पसीने में तरबतर हो रहे थे । जब तोत्तो-चान खतरा उठाकर उसे सीढ़ी से पेड़ पर खींच रही थी तब भी धूप पड़ रही थी लेकिन बादल का एक टुकड़ा उन पर छाया कर रहा था ।

   इस बदलाव का कारण यही लगता है कि पहले तो प्रकृति उनके साहस और निश्चय की परीक्षा ले रही थी और उनको सफल होते देखकर स्वयं उनकी सहायता कर रही थी ।
4. 'यासुकी-चान के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह पहला और अंतिम मौका था ।'

   लेखिका ने ऐसा इसलिए लिखा होगा कि यासुकी-चान पहली बार पेड़ पर चढ़ा था और इसके बाद उसके लिए दोबारा पेड़ पर चढ़ने का कोई मौका नहीं मिलने वाला था क्योंकि वह स्वयं तो चढ़ नहीं सकता था और तोत्तो-चान दोबारा ऐसे मुश्किल और खतरनाक काम को करने को तैयार नहीं होती ।

पाठ से आगे—

1. मैं एक वैज्ञानिक बनकर नए-नए आविष्कार करना चाहता हूँ । यद्यपि यह काम आसान नहीं है लेकिन मैं तीव्र इच्छा और कठोर परिश्रम करके अपना लक्ष्य पाना चाहता हूँ।
2. पर्वतों की चोटियों पर चढ़ना एक कठिन और रोमांचकारी काम है । मैंने टी.वी. पर लोगों को पर्वतों पर चढ़ते देखा है । मैं भी एक बार किसी चोटी पर चढ़ने का अवसर पाना चाहता हूँ । इसके लिए मुझे किसी पर्वतारोहण की शिक्षा देने वाली संस्था में प्रवेश लेना होगा । कठिन परिश्रम करके मैं किसी पर्वतारोही दल के साथ जाकर इस अनुभव को प्राप्त कर सकता हूँ । यह कार्य बहुत रोमांचकारी होता है ।

अनुमान और कल्पना—

1. किसी प्रिय या सम्माननीय व्यक्ति के सामने झूठ बोलते समय आँखें मिलाकर बात करने की हिम्मत नहीं होती है । इसीलिए तोत्तो-चान की नजरें नीचे थीं ।
2. परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है ।

भाषा की बात—

1. परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है ।
2. चिचियाना, लठियाना, बतियाना, थपथपाना।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (घ), 2. (ग), 3. (ख), 4. (ग), 5. (घ)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. उनको यह बात पता न थी कि तोत्तो-चान यासुकी-चान को अपने पेड़ पर चढ़ाएगी ।
2. उसे पूरी शिष्टता से पूछना पड़ता था । "माफ कीजिए, क्या मैं ऊपर आ जाऊँ ?"
3. यासुकी-चान के उदास हो जाने का कारण यह था कि तोत्तो-चान के सहारा देने पर भी वह सीढ़ी पर नहीं चढ़ पाया ।
4. तोत्तो-चान दोबारा चौकीदार के छप्पर में गई और वहाँ से एक तिपाई-सीढ़ी घसीटकर ले आई ।
5. कठिन परिश्रम से यासुकी-चान सीढ़ी के ऊपर तक तो पहुँच गया लेकिन सीढ़ी से द्विशाखा पर जाने में सफल नहीं हुआ । यह कठिन समस्या सामने आ गई ।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. स्कूल के बच्चों ने बाग के पेड़ों में से एक-एक पेड़ अपने चढ़ने के लिए सुरक्षित कर लिया था । उस पेड़ को वह अपनी निजी संपत्ति मानता था । दूसरे के पेड़ पर चढ़ने के लिए उससे अनुमति लेनी पड़ती थी।
2. यासुकी-चान को पोलियो की बीमारी हो गई थी । इस कारण उसके हाथ-पैर बहुत दुबले-पतले और कमजोर थे । उस पर दूर तक चला भी नहीं जाता था, क्योंकि वह पेड़ पर स्वयं नहीं चढ़ सकता था, इसलिए उसने किसी पेड़ को अपना निजी पेड़ नहीं बनाया था ।
3. तोत्तो-चान ने बड़े उपायों और परिश्रम से यासुकी-चान को सीढ़ी पर ऊपर तक तो चढ़ा दिया लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी वह सीढ़ी से पेड़ पर नहीं पहुँच पाया । तब तोत्तो-चान ने एक बहुत जोखिमपूर्ण उपाय अपनाया । वह द्विशाखा पर खड़ी हो गई और लेटे हुए यासुकी-चान को पेड़ पर खींचने लगी । इस उपाय में दोनों में से कोई भी नीचे गिर सकता था ।
4. यासुकी-चान ने बताया कि अमेरिका में उसकी बहिन रहती है । उसने बताया था कि वहाँ टेलीविजन नाम की एक चीज होती है । जब टेलीविजन जापान में आ जाएगा तो वे घर बैठे सूमो पहलवानों की कुश्ती देख सकेंगे । उसकी बहिन ने बताया था कि टेलीविजन एक डिब्बे की तरह होता है ।
5. यासुकी-चान को पोलियो था अत: वह पेड़ पर नहीं चढ़ सकता था । इसलिए तोत्तो-चान ने उसे अपने पेड़ पर चढ़ने का न्योता दिया । उसने यासुकी-चान को बाग में पहुँचने को कहा और स्वयं भी वहाँ पहुँच गई । वहाँ जाकर वह चौकीदार के छप्पर में से एक सीढ़ी निकालकर लाई और यासुकी-चान से उस पर चढ़ने को कहा लेकिन वह नहीं चढ़ पाया । तब वह फिर चौकीदार के छप्पर में गई और एक तिपाई-सीढ़ी घसीट लाई । उसने सहारा देकर यासुकी-चान को सीढ़ी के ऊपर तक चढ़ा दिया । जब वह सीढ़ी से पेड़ पर न जा सका तो उसने उसे लिटाकर पेड़ पर खींचा । इस प्रकार बड़ी कठिनाई से उसने यासुकी-चान को अपने पेड़ पर चढ़ाया।

**

पाठ-8 रहीम के दोहे

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

दोहे से—

1. (1) कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
– कथन

बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत ।
–उदाहरण

(3) कहि रहीम परकाज हित, संपति- सचहिं सुजान।
– कथन

तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियत न पान।
–उदाहरण

(4) थोथे बादर क्वार के, ज्यों रहीम घहरात
– कथन

धनी पुरुष निर्धन भए, करें पाछिली बात।

– उदाहरण

(5) जैसी परे सो सहि रहे, त्यों रहीम यह देह ।

– कथन

धरती की-सी रीत है, सीत घाम औ मेह ।

– उदाहरण

2. कवि द्वारा क्वार मास के बादलों को उन निर्धन लोगों के समान बताना सही है जो पहले धनवान थे । क्वार मास के बादल भी निर्धन होते हैं क्योंकि उनका जलरूपी धन समाप्त हो जाता है। जैसे धनी से निर्धन हो गया व्यक्ति अपने पिछले समय के बारे में बता-बताकर लोगों पर प्रभाव डालना चाहता है, उसी प्रकार क्वार मास के बादल भी गरज-गरजकर वर्षा-ऋतु में अपने जल बरसाने की याद कराते हैं, बरस नहीं सकते।

सावन के गरजने और बरसने वाले बादल सच्चे दानी हैं। वे देने की बातें ही नहीं करते वरन् जलदान भी करते हैं ।

दोहों से आगे—

(क) इस दोहे में कवि ने जीवन में परोपकार के महत्व की ओर संकेत किया है । यदि लोग 'तरुवर' और 'सरवर' के समान परोपकार के लिए धन एकत्र करने लगें तो समाज के निर्बल और निर्धन लोगों का बहुत भला होगा।

(ख) धरती जैसा धैर्यवान और कोई नहीं है । वह ठंड, गर्मी और वर्षा को बिना कोई शिकायत किए सहन करती रहती है । यदि लोग इस गुण को धारण कर लें तो उनका जीवन दुख-रहित हो जाएगा ।

भाषा की बात—

1. **बिपति**-विपत्ति, **बादर** - बादल
   मछरी - मछली, **सीत** - शीत।
2. (क) संपति सगे 'स' की आवृत्ति
   (ख) मीनन को मोह 'म' की आवृत्ति
   (ग) छाँड़ति छोह 'छ' की आवृत्ति
   (घ) संपति सचहिं सुजान 'स' की आवृत्ति
   (ङ) सो सहि रहै 'स' की आवृत्ति।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (घ), 2. (ख), 3. (ग), 4. (घ), 5. (ख)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. कवि ने सच्चे मित्र की पहचान बताई है कि सच्चा-मित्र विपत्ति के समय में साथ नहीं छोड़ता है, संकट में साथ देता है।
2. जब मछली जाल में फँस जाती है तो जल उसे छोड़ जाता है लेकिन मछली इतने पर भी उसके वियोग में प्राण त्याग देती है ।
3. वृक्ष और तालाब से हमें परोपकार की शिक्षा मिलती है । वृक्ष के फल और तालाब का जल दूसरों के ही काम आते हैं ।
4. क्वार मास के बादल बिना जल के आसमान में गरजते हुए उमड़ते-घुमड़ते हैं।
5. धरती ठंड, गर्मी और वर्षा सभी को धैर्यपूर्वक सहन करती रहती है ।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. क्वार मास आने पर बादलों का बरसना बंद हो जाता है वे जल-रहित प्रतीत होते हैं । वे केवल घुमड़ते और गरजते हैं, बरस नहीं सकते । इसी प्रकार धनवान जब निर्धन हो जाता है तो वह अपने पिछले किए गए दान और वैभव की बातें ही करता है । वह किसी की सहायता नहीं कर सकता ।
2. 'रहीम के दोहे' पाठ में कवि द्वारा प्रस्तुत विचार संक्षेप में इस प्रकार हैं— कवि कहता है कि जब किसी व्यक्ति के पास संपत्ति होती है तो बहुत से लोग उसके मित्र बन जाते हैं, लेकिन जो विपत्ति के समय साथ देते हैं वे ही सच्चे मित्र होते हैं । कवि कहता है कि मछली का जल से प्रेम आदर्श प्रेम का उदाहरण होता है । जाल में फँसने पर जल तो मछली का साथ छोड़ जाता है लेकिन मछली उसके वियोग को सहन नहीं कर पाती और प्राण त्याग देती है ।

   आगे कवि ने परोपकारी व्यक्तियों के स्वभाव की तुलना वृक्षों और तालाबों से की है जिनके फल और

जल दूसरों के ही काम आते हैं । कवि धनी से निर्धन हो जाने वाले लोगों की तुलना गरजने वाले बादलों से करता है । अंतिम दोहे द्वारा कवि मनुष्यों को धरती के समान सहनशील बनने की प्रेरणा देता है ।

**

पाठ-9 एक तिनका

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कविता से—

1. (क) एक दिन जब मुंडेर पर खड़ा था ।
   (ख) आँख भी लाल होकर दुखने लगी ।
   (ग) बेचारी ऐंठ दबे पाँवों भगी ।
   (घ) जब किसी ढब से तिनका निकल गया।
2. 'एक तिनका' कविता में कवि ने एक दिन की घटना का वर्णन किया है । वह मुंडेर के समीप खड़ा था । उसका मन घमंड और अकड़ से भरा था । अचानक एक तिनका उड़ता हुआ उसकी आँख में आ गिरा । इससे उसे बड़ी बेचैनी हुई । आँख लाल होकर दुखने लगी । जब तक तिनका निकल न गया उसे शांति नहीं मिली । तब उसे समझ आई कि वह बेकार अपने ऊपर घमंड कर रहा था । एक जरा-से तिनके ने उसे व्याकुल कर दिया ।
3. आँख में तिनका पड़ते ही वह बेचैन हो उठा। उसकी आँख लाल हो गई और दुखने लगी । लोगों ने कपड़े की मूँठ की सहायता से तिनका निकाला । उसकी सारी ऐंठ जरा-सी देर में गायब हो गई ।
4. घमंडी की आँख से तिनका निकालने के लिए लोगों ने कपड़े की मूँठ से आँख की सिकाई की और अनेक यत्न करके तिनके को निकाला ।
5. इन दोनों पद्यांशों में मनुष्य को घमंड न करने की चेतावनी दी गई है । दोनों में तिनके का उदाहरण दिया गया है । अंतर यह है कि पहले अंश में तिनके की शक्ति बताई गई है और दूसरे में तिनके जैसी तुच्छ वस्तु की भी उपेक्षा न करने की चेतावनी दी गई है ।

अनुमान और कल्पना—

नोट—परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं ।

भाषा की बात—

(क) मेंढक पानी में छप से कूद गया ।
(ख) नल बंद होने के बाद पानी की एक बूँद टप से चू गई।
(ग) शोर होते ही चिड़िया फुर्र से उड़ी ।
(घ) ठंडी हवा सन्न से गुजरी, मैं ठंड में थर्र से काँप गया।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (घ), 2. (ग), 3. (ग), 4. (ग), 5. (ग)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. कवि स्वभाव से घमंडी और अकड़ू था । अपने सामने किसी को कुछ नहीं समझता था।
2. एक दिन जब वह मुँडेर पर ऐंठा हुआ खड़ा था, तभी उसकी आँख में एक तिनका गिर गया।
3. आँख में तिनका गिरने पर कवि को झटका-सा लगा। वह बड़ा बेचैन हो गया । उसकी आँख लाल होकर दुखने लगी । लोग कपड़े की मूँठ आदि देकर दर्द कम करने लगे और कवि की अकड़ गायब हो गई ।
4. कवि की समझ ने उसे ताना दिया कि वह बेकार इतना अकड़ता था । उसकी अकड़ निकालने के लिए तो एक छोटा-सा तिनका ही बहुत है ।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. कवि ने स्वयं को ही घमंडी कहा है । जब कवि अपने घर की मुंडेर के पास खड़ा था । कहीं से एक तिनका उड़ता हुआ आकर उसकी आँख में गिर गया । इससे वह बहुत बेचैन हो गया। उसकी आँख लाल हो गई और दुखने लगी । तब लोगों की सहायता से जैसे-तैसे तिनका निकला । इस प्रकार घमंडी का सारा घमंड एक जरा-से तिनके ने दूर कर दिया ।

2. घमंड करने से व्यक्ति को अनेक हानियाँ होती हैं– उसे सच्चा मित्र नहीं मिलता, लोग उसकी सहायता नहीं करते, उसे कोई भी पसंद नहीं करता। जबकि विनम्र व्यक्ति के अनेक मित्र होते हैं। सभी लोग उसे बहुत पसंद करते हैं। हर समय उसकी सहायता के लिए लोग तैयार रहते हैं।

**

पाठ-10 खानपान की बदलती तसवीर

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

निबंध से–

1. खान-पान की मिश्रित संस्कृति से लेखक का मतलब है एक प्रदेश के व्यंजनों का दूसरे प्रदेशों में प्रचलित होना, जैसे– गुजरात का ढोकला और गाठिया अन्य प्रदेशों में भी आ गया है ।

   हमारे घर में भी खान-पान की मिश्रित संस्कृति चल रही है। मेरी बहन को इडली- सांभर और ढोकला बहुत पसंद हैं और जब-तब घर में बनते रहते हैं । इसी प्रकार ब्रेड भी नाश्ते में चलती है । उत्तर-भारत के स्थानीय व्यंजनों के साथ हम अन्य प्रदेशों के व्यंजनों का स्वाद लेते रहते हैं ।

2. खान-पान में बदलाव के कई फायदे हैं ? इससे भोजन में विविधता आई है । गृहिणियों और कामकाजी महिलाओं का शीघ्र तैयार हो जाने वाले व्यंजनों से परिचय हुआ है। मिश्रित खान-पान अपनाने से राष्ट्रीय एकता की भावना बढ़ती है । लेखक की चिंता के कई कारण हैं । नई पीढ़ी विदेशी व्यंजनों की तरफ अधिक आकर्षित हो रही है। इनमें 'फास्ट फूड' जैसे व्यंजन भी हैं जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक बताए जाते हैं । स्थानीय व्यंजन धीरे-धीरे गायब होते जा रहे हैं । लोग दावतों में व्यंजनों की भीड़ होने से उनके असली स्वाद से वंचित हो रहे हैं ।

3. खान-पान के मामले में स्थानीयता का अर्थ है– किसी स्थान या प्रदेश में पहले से प्रचलित व्यंजन, जैसे– इडली, डोसा, सांभर आदि दक्षिणी प्रदेशों के स्थानीय व्यंजन हैं । ढोकला, गाठिया आदि गुजरात के स्थानीय व्यंजन हैं। रोटी, दाल, पूड़ी, कचौड़ी, जलेबी आदि उत्तर प्रदेश, दिल्ली, बिहार आदि के स्थानीय व्यंजन हैं ।

निबंध से आगे–

1. परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है ।
2. (i) दाल-भात, रोटी, पापड़ (भोजन)।

   (ii) आलू, बैंगन (सब्जियाँ)।

   (iii) उबालना, तलना, भूनना, सेंकना (पकाने की विधि)।

   (iv) मीठा, तीखा, नमकीन, कसैला (स्वाद)।
3. **छौंक**—साग-सब्जी आदि में जायका लाने के लिए गर्म तेल या घी में हींग एवं जीरा डालकर उसे सब्जी या दाल में डालते हैं। इसे छौंक कहते हैं ।

   चावल—इन्हें पानी में उबालकर पकाया जाता है और दाल या कढ़ी के साथ खाया जाता है।

   कढ़ी—यह बेसन को छाछ या दही में घोलकर, पकाकर और मेंथी का छौंक लगाकर बनाई जाती है। इसमें बेसन की पकौड़ी भी मिलाई जाती हैं।
4. परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है ।
5. सूची इस प्रकार हो सकती है–

   दोपहर भोजन – रोटी, दाल, चावल, दही, पापड़, अचार ।

   रात्रि भोजन – पूड़ी, कचौड़ी, पुए, खीर। सब्जी—आलू पनीर, सूखी सब्जी आलू-गोभी-मटर, रायता ।

अनुमान और कल्पना–

नोट– प्रश्न 1 व 2 परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं हैं ।

3. खाने-पीने की चीजों में मिलावट के समाचार अखबारों में आते रहते हैं । आटा, दाल, चावल, मसाले, घी, तेल, मिठाई, दूध, मावा, नमकीन आदि शायद ही कोई खाद्य-पदार्थ होगा, जिसमें मिलावट नहीं होती हो। मैंने दूधिए को तालाब से दूध में पानी मिलाते देखा है ।

मिलावट से आर्थिक और शारीरिक दोनों प्रकार का नुकसान होता है । खाद्य- पदार्थों में ऐसी वस्तुओं की मिलावट की जाती है जिससे गंभीर बीमारियाँ हो सकती हैं।

छात्र समाचार-पत्रों में मिलावट संबंधी खबरें खोजकर इन पर कक्षा में चर्चा करें ।

भाषा की बात—

1. **सीना-पिरोना—** आजकल लड़कियाँ सीना-पिरोना नहीं सीखती हैं ।

   भला-बुरा— अपना भला-बुरा सोचकर ही किसी काम में हाथ डालना चाहिए ।

   चलना-फिरना— पिछले सप्ताह से चारपाई छोड़कर उसने चलना-फिरना शुरू किया है।

   लंबा-चौड़ा— मुकेश का मुंबई में लम्बा- चौड़ा कारोबार है।

   कहा-सुनी — थोड़ी-बहुत कहा-सुनी तो हर घर में होती रहती है।

   घास-फूस— बगीचे में चारों ओर घास-फूस उग आया है ।

2. परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है ।

कुछ करने को—

नोट — परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ग), 2. (ग), 3. (ख), 4. (ग), 5. (ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. बड़ा बदलाव यह है, कि एक प्रदेश के व्यंजनों का दूसरे प्रदेशों में लोकप्रिय होना ।
2. फास्ट फूड में बर्गर, नूडल, पिज्जा आदि व्यंजन आते हैं ।
3. उत्तर भारत में दक्षिण के इडली, डोसा, साँभर तथा बंगाल के रसगुल्ले एवं गुजरात के ढोकला, गाठिया आदि प्रचलित हो गए हैं ।
4. पहले ब्रेड साहब लोगों के नाश्ते में काम आती थी लेकिन अब पूरे देश में सेंककर और तलकर खाई जा रही हैं।
5. स्थानीय व्यंजनों का प्रयोग घट गया है और उनकी गुणवत्ता में भी कमी आ गई है ।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. पिछले कुछ वर्षों में हमारी खानपान की संस्कृति में बड़ा बदलाव आया है । दक्षिण भारत के अनेक व्यंजन जैसे— इडली, डोसा, बड़ा, साँभर आदि उत्तर भारत में प्रचलित हो गए हैं । फास्ट-फूड का प्रचलन भी बहुत बढ़ा है । बर्गर, नूडल्स और पिज्जा आदि युवा पीढ़ी के प्रिय व्यंजन बन गए हैं ।
2. नए-नए व्यंजनों के आ जाने से उत्तर भारत के स्थानीय व्यंजन घटते जा रहे हैं । दिल्ली के छोले-कुल्चे, मथुरा के पेड़े तथा आगरे के पेठा-दालमोंठ की गुणवत्ता भी पहले जैसी नहीं रही है । अब घरों में स्त्रियाँ पहले की तरह मौसमी फलों और खाद्यान्नों से व्यंजन बनाने में रुचि नहीं लेती हैं क्योंकि इनको बनाने में काफी समय और श्रम लगता है।
3. घरेलू स्त्रियों को जल्दी तैयार हो जाने वाले अनेक व्यंजन बनाने की विधियाँ आ गई हैं । देश की नई पीढ़ी को देश-विदेश के नए-नए व्यंजनों को जानने और चुनने का अवसर प्राप्त हुआ है । खान-पान के एक प्रदेश से दूसरे प्रदेशों में प्रचलित होने से राष्ट्रीयता की भावना का विस्तार हुआ है ।
4. लेखक ने बताया है कि कुछ वर्षों से देश में खानपान के तरीकों में एक बड़ा बदलाव देखने में आया है । अब देश के विभिन्न प्रदेशों के स्थानीय व्यंजन अन्य प्रदेशों में भी अपनाए गए हैं । दक्षिण भारत के इडली, डोसा, बड़ा तथा साँभर आदि अब उत्तर भारत में भी प्रचलित हो गए हैं । गुजरात का ढोकला और गाठिया तथा बंगाली मिठाइयाँ भी उत्तर भारत में लोकप्रिय हो गई हैं । इसी प्रकार उत्तर भारत की ढाबा संस्कृति भी पूरे देश में फैल चुकी है और लगभग हर जगह दाल, रोटी, साग और दूसरे उत्तर भारतीय व्यंजन प्राप्त हो जाते हैं।

   लेखक के अनुसार अब खानपान की मिश्रित संस्कृति है।

इस मिश्रित संस्कृति में देशी के साथ-साथ विदेशी व्यंजन भी आ गए हैं । खास-कर फास्ट फूड का प्रचलन बढ़ता ही जा रहा है।

लेखक के अनुसार इस बदलाव से जहाँ कुछ लाभ हुए हैं, वहीं कुछ हानियाँ भी हुई हैं । इससे शीघ्र तैयार होने वाले व्यंजनों का प्रचार हुआ है, राष्ट्रीयता की भावना पुष्ट हुई है। इसके साथ ही स्थानीय व्यंजनों का प्रयोग कम हो गया है और फास्ट फूड जैसे हानिकारक व्यंजन लोकप्रिय होते जा रहे हैं।

**

पाठ-11 नीलकंठ

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

निबन्ध से—

1. मोर का नाम नीलकंठ उसकी नीली गरदन के आधार पर रखा गया और मोरनी का नाम राधा रखा गया क्योंकि वह नीलकंठ की छाया के समान उसके साथ रहती थी जैसे राधा कृष्ण के साथ।
2. मोर के बच्चों का स्वागत वैसा ही हुआ जैसा नई आई बहू का परिवार में हुआ करता है । कबूतर नाचना भूलकर दौड़ पड़े और गुटर गूँ की ध्वनि करते हुए उनकी परिक्रमा-सी करने लगे । खरगोश बड़ी सभ्यता से बैठकर उनका निरीक्षण करने लगे । छोटे खरगोश उछल- कूद मचाने लगे । तोते एक आँख बंद करके बड़े ध्यान से उन्हें देखने लगे ।
3. लेखिका को नीलकंठ का रंग-बिरंगे पंखों को गोलाकार खड़े करके लयताल के साथ नृत्य करना बहुत भाता था । दाना चुगते समय, पानी पीते समय और किसी शब्द को सुनते समय उसका गर्दन को तरह-तरह से चलाना भी लेखिका को अच्छा लगता था ।
4. यह वाक्य लँगड़ी मोरनी 'कुब्जा' के आगमन, उसके उत्पातों और उसी के कारण नीलकंठ की मृत्यु हो जाने की घटना की ओर संकेत कर रहा है ।
5. नीलकंठ मंजरियों से लदे आम के वृक्षों और नए लाल पत्तों से लदे अशोक के वृक्षों को देखता उन पर विचरण करने को बेचैन हो जाता था । इसलिए उसे जालीघर में बंद रहना सहन नहीं होता था ।
6. कुब्जा स्वभाव से झगड़ालू और ईर्ष्या करने वाली थी । वह राधा को नीलकंठ के साथ नहीं देखना चाहती थी। उसने राधा के अंडे द्वेषवश फोड़ डाले । उसके इन्हीं दुर्गुणों के कारण उसकी किसी से मित्रता नहीं हो सकी।
7. नीलकंठ ने साँप के फन को अपने पंजों से दबा लिया और अपनी तीखी चोंच से उस पर लगातार चोटें कीं । इससे खरगोश के बच्चे पर साँप की पकड़ ढीली हो गई और वह उसके मुँह से बाहर निकल आया ।

   यह घटना नीलकंठ के स्वभाव की कई विशेषताओं पर प्रकाश डालती है । इससे पता चलता है कि नीलकंठ एक वीर स्वभाव का पक्षी था । वह पीड़ित जीव की रक्षा के लिए तैयार रहता था । उसके हृदय में ममता की भावना भी थी । उसने खरगोश के बच्चे को रात-भर अपने पंखों के नीचे छिपाकर गर्मी दी और उसकी जान बचाई । दुष्टों के प्रति वह क्रूर और कठोर भी था । उसने साँप के टुकड़े-टुकड़े कर डाले ।

निबंध से आगे —

1. रेखाचित्र अंग्रेजी के 'स्केच' शब्द का हिंदी रूपांतरण है। इसमें शब्दों के माध्यम से किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को उभारा जाता है। यह मर्मस्पर्शी एवं भावरूप विधा है। रेखाचित्र का वर्णन विषय वास्तविक होता है। आंतरिक और बाहरी विशेषताएँ कलात्मक ढंग से अभिव्यक्ति पाती हैं इसमें व्यक्ति की सारी विशेषताएँ उभर कर सामने आ जाती हैं।

   नोट—प्रश्न 2 और 3 परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं हैं ।

अनुमान और कल्पना—

1. लेखिका ने नीलकंठ को गंगा के बीच में प्रवाहित किया तब उसके सतरंगे पंखों और उनमें सुशोभित चंद्रिकाएँ गंगा की लहरों पर प्रतिबिम्बित हुई होंगी । बिम्ब-प्रतिबिम्ब का यह सिलसिला उठती हुई तरंगों

के साथ दूर तक छा गया होगा । सारा जल चंद्रिका मय हो गया होगा । उस समय लेखिका को गंगा का चौड़ा पाट एक विशाल मोर पंख जैसा प्रतीत हुआ होगा ।

2. वर्षा ऋतु थी । आकाश में साँवले मेघ घिरे हुए थे । अचानक बूँदें गिरने लगीं । नीलकंठ का मन नृत्य करने को मचल उठा । उसने अपने सतरंगे पंख मंडलाकार तान लिए, कभी आगे, कभी पीछे, कभी दाएँ, कभी बाएँ क्रम से घूमने लगा । उसकी गति लय-ताल में बँधी थी । नाचते हुए वह किसी अज्ञात सम पर रुकता भी था । उसके नृत्य में जातीय विशेषताओं और मानवीकरण का मन-मोहक मिश्रण था ।

भाषा की बात—

1. गंध — सुगंध, दुर्गंध, निर्गंध
   रंग — सुरंग, सतरंग, विरंग
   फल — कुफल, सुफल, विफल
   ज्ञान — अज्ञान, विज्ञान, संज्ञान ।
2. संधि— नील + आभ = नीलाभ
   नव + आगंतुक = नवागंतुक
   विग्रह— सिंहासन = सिंह + आसन
   मेघाच्छन्न = मेघ + आच्छन्न।

कुछ करने को—

नोट—परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ग), 2. (ग), 3. (घ), 4. (ग), 5. (ख)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. कुब्जा ईर्ष्यालु और झगड़ालू स्वभाव की मोरनी थी । वह नीलकंठ के साथ राधा को देखकर भड़क जाती थी । उसने राधा की कलगी नोंच डाली और उसके अंडे फोड़ डाले ।
2. नीलकंठ कुब्जा के डर से भागा-भागा फिरता था । वह राधा के साथ नहीं रह पाता था । शायद इसी दु:ख के कारण उसकी मृत्यु हो गई ।
3. नीलकंठ लेखिका से बहुत प्यार करता था । लेखिका ने उसके मृत शरीर को अपने शाल में लपेटकर संगम पर ले जाकर गंगा में प्रवाहित कर दिया ।
4. कुब्जा की किसी प्राणी से मित्रता नहीं थी । वह हर किसी से उलझ पड़ती थी । एक बार वह आम के पेड़ से नीचे उतरी तो लेखिका की कुतिया कजली से सामना हो गया । कुब्जा ने उस पर चोंच से प्रहार किया तो उसने भी उसकी गर्दन दबा ली । घायल होकर कुब्जा मर गई ।
5. इन तीनों पक्षियों के व्यवहार को देखकर लेखिका को पक्षियों के ईर्ष्या, प्रेम, सहयोग आदि व्यवहारगत विशेषताओं तथा मित्रतायुक्त स्वभावादि का परिचय प्राप्त हुआ ।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. नीलकंठ का जीव-जन्तुओं के प्रति व्यवहार एक सेनापति और संरक्षक जैसा ही था । सवेरा होने पर वह सभी को घेरकर दाना डाले जाने के स्थान पर ले जाता था और घूम-घूमकर सबकी रखवाली करता था । यदि कोई जीव कुछ गड़बड़ी करता तो वह उसे चोंच के प्रहार से दंड देने को दौड़ पड़ता था । उसने बड़ी वीरता से खरगोश के बच्चे की साँप से रक्षा की थी ।
2. नीलंकठ और राधा साथ-साथ ही लेखिका के घर आए थे । दोनों साथ-साथ ही बड़े हुए थे । अत: उनमें परस्पर बड़ा स्नेहभाव था । दोनों साथ-साथ ही रहते थे । जब वर्षा ऋतु में नीलकंठ नाचता था तो राधा उसके आगे-पीछे, दाएँ-बाएँ घूमती थी । नीलकंठ की मृत्यु हो जाने पर वह कई दिन तक चुपचाप कोने में बैठी रही । उसे नीलकंठ के लौट आने की आशा बनी रही। वर्षा ऋतु आने पर वह कभी झूले और कभी अशोक की डाल पर बैठकर ऊँचे स्वर में मानो नीलकंठ को बुलाती रहती थी ।
3. नीलकंठ को लगता था कि लेखिका को उसका नृत्य बहुत भाता है । इसलिए वह लेखिका के जालीघर पर पहुँचते ही नृत्य की मुद्रा में खड़ा हो जाता था । लेखिका के साथ आने वाले विदेशी अतिथियों का भी वह इसी प्रकार स्वागत करता था। यही देखकर विदेशी महिलाओं ने उसे 'परफेक्ट जेंटिलमैन, अर्थात् पूर्ण सज्जन की उपाधि दे दी थी।

4. वैसे तो अपने पालतू जीवों से सभी को लगाव होता है लेकिन महादेवी जी की पालतू जीवों के प्रति गहरी आत्मीयता थी । हर प्राणी उनके लिए एक परिवार के सदस्य के समान होता था । उन्होंने सभी जीव-जन्तुओं के लिए जालीघर बनवा रखा था। नए आने वाले जीव को पहले उनके निजी कमरे में स्थान मिलता था । मोर के बच्चों को वह मुँहमाँगे पैसे देकर लाई थीं । यहाँ तक कि टूटे पंजों वाली मोरनी की दशा देखकर उनका हृदय द्रवित हो गया । उसे भी खरीदकर ले आईं और उसका उपचार किया । राधा और नीलकंठ दोनों उनको बहुत प्रिय थे । कुब्जा ने राधा को बहुत कष्ट दिए और वही नीलकंठ की मृत्यु का कारण बनी लेकिन कुतिया द्वारा घायल किए जाने पर लेखिका ने उसका भी इलाज कराया । नीलकंठ के शव को अपने शाल में लपेटकर संगम ले जाना और गंगा में प्रवाहित करना, पशु-पक्षियों के प्रति उनके प्रेम का प्रत्यक्ष प्रमाण था ।

**

पाठ-12 भोर और बरखा

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कविता से—

1. यशोदा अपने पुत्र श्रीकृष्ण को जगाने के लिए उन्हें इन संबोधनों से पुकार रही हैं । श्रीकृष्ण को जगाने के लिए वह कहती हैं कि रात बीत गई है, सवेरा हो गया है, घरों के द्वार खुल गए हैं और गोपियाँ दही मथ रही हैं। ग्वाल-बाल शोर करते हुए जय-जयकार कर रहे हैं । देव और मनुष्य भी द्वार पर खड़े कृष्ण के जागने की प्रतीक्षा कर रहे हैं ।
2. माँ के द्वारा जगाए जाने पर श्रीकृष्ण ने मक्खन और रोटी का कलेवा हाथ में ले लिया और गायों के रखवाले बनकर ग्वाल- बालों के साथ गाय चराने को तैयार हो गए ।
3. ब्रज की संस्कृति 'भोर' अर्थात् प्रातःकाल का दृश्य अलग ही होता है । माताएँ बच्चों को प्यार से जगाती हैं । पशु-पालकों के गाँवों में बच्चे सवेरे ही गायें आदि चराने के लिए अपना-अपना कलेवा लेकर चल देते हैं । घरों में स्त्रियाँ दही मथने लगती हैं । घर-घर के द्वार बड़े सवेरे ही खुल जाते हैं ।
4. एक तो वर्षा की सुहावनी ऋतु थी बादल उमड़-घुमड़ रहे थे । नन्हीं-नन्हीं बूँदें बरस रही थीं । दूसरे उनको ज्ञात हुआ कृष्ण भी उधर आने वाले हैं । इन्हीं कारणों से उन्हें सावन मनभावन लग रहा था ।
5. सावन वर्षा ऋतु का मास होता है । बदलियाँ बरसती हैं । बादल उमड़-घुमड़कर आकाश में छा जाते हैं। बिजली चमककर संकेत करती है कि वर्षा की झड़ी लगने वाली है और फिर नन्हीं-नन्हीं बूँदें पड़ने के साथ मन प्रसन्न करने वाली शीतल पवन चलने लगती है । स्त्रियाँ आनंद-मग्न होकर गीत गाने लगती हैं।

कविता से आगे—

1. भक्तिकाल के अन्य प्रमुख कवि हैं- कबीर, सूर, तुलसी, रसखान आदि । इन कवियों की रचनाएँ क्रमशः इस प्रकार हैं—

   कबीर-बीजक, सूर- सूरसागर, तुलसी- रामचरितमानस, रसखान - सुजान रसखान ।
2. वर्षा ऋतु के दो अन्य महीने हैं— आषाढ़ तथा भाद्रपद (भादों) ।

अनुमान और कल्पना—

1. मैं एक नगर-निवासी हूँ । सुबह जागने पर पूरब में छाई लालिमा और फिर लाल-लाल गोले जैसा उगता सूरज मुझे बहुत अच्छा लगता है । आकाश में पंक्तियों में उड़ते-चहचहाते पक्षी भी अच्छे लगते हैं । मंदिरों से आती घंटों की ध्वनि और भजनों के स्वर भी मुझे अच्छे लगते हैं ।
2. मैं अपने छोटे भाई-बहिन को जगाने के लिए उनके बिस्तर के पास जाकर प्यार से उनके सिर पर हाथ फेरकर मधुर आवाज मैं जगाऊँगा, उठो, सबेरा हो गया है, विद्यालय के लिए देर हो जायेगी। माँ ने आपका मानचाहा नाश्ता भी तैयार किया है ?

3. वर्षा में भीगना और खेलना मुझे बहुत अच्छा लगता है। माँ और पिताजी मुझे मना करते हैं पर मेरा मन नहीं मानता। मैं चुपचाप छत पर पहुँच जाता हूँ और वर्षा का आनन्द लेता हूँ ।

4. **(क)** गाँव की सुबह उषा की लालिमा लिए आती है । पक्षी कलरव करने लगते हैं । घरों में स्त्रियाँ सबसे पहले जागती हैं और झाड़ू लगाने, दूध काढ़ने, रसोई सम्हालने आदि कामों में लग जाती हैं । खेतों या काम पर जाने वालों के लिए नाश्ते की तैयारी होने लगती है । स्कूल जाने वाले बच्चों को जगाया जाता है । पीने का पानी लाने के लिए स्त्रियाँ कुओं और हैण्डपम्पों पर पहुँच जाती हैं ।

(ख) रेलवे प्लेटफार्म पर सुबह यात्रियों, चायवालों और कुलियों की तरह-तरह की आवाजें आती हैं। कुछ लोग बेंचों और जमीन पर सोए रहते हैं । सुबह की गाड़ी से जाने वाले तेज कदमों से आते हैं । टिकट खिड़की पर अधिक भीड़ नहीं रहती ।

(ग) नदी किनारे सुबह का दृश्य बड़ा शांत और आनंददायक होता है । घाट पर स्नान करने वालों की भीड़ रहती है । सूर्योदय का दृश्य बड़ा मनोहारी होता है । अनेक लोग स्नान करके मंदिर जाते हैं । कुछ सूर्य को जल चढ़ाते हैं ।

(घ) पहाड़ों पर सुबह का दृश्य बहुत ही सुहावना होता है । पूरब में सुबह की लालिमा छा जाती है । ऊँची बर्फ से ढँकी चोटियाँ अनोखे रंग बदलती हैं । ठंडे मौसम में सब कुछ कुहरे में ढका रहता है । धूप निकलने पर ही चहल-पहल दिखाई देती है ।

भाषा की बात—

1. एक शब्द है 'गोपाल' या 'ग्वाला' ।

2. **(i) प्यारी-प्यारी आवाज** - चिड़िया की प्यारी-प्यारी आवाज सुनकर सेठ बड़ा प्रसन्न हुआ ।

   (ii) रोम-रोम - मेरा रोम-रोम देश-प्रेम के गीत गा रहा है ।

कुछ करने को—

कृष्ण को 'गिरधर' इसलिए कहा जाता है कि इन्होंने गिरिराज पर्वत को उँगली पर उठा लिया था ।

छात्र कृष्ण द्वारा गिरिराज पर्वत उठाने की कथा अपने माता-पिता से सुनें और कक्षा में सुनाएँ ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ख), 2. (ख), 3. (घ), 4. (क), 5. (क)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. गोपियाँ प्रात:काल उठकर दही मथ रही थीं । इस कारण उनके कंगन हिलते हुए ध्वनि कर रहे थे ।
2. यशोदा द्वारा जगाए जाने पर श्रीकृष्ण जाग गए। उन्होंने मक्खन और रोटी हाथ में लेकर कलेवा किया और ग्वाल-बालों के साथ गाएँ चराने की तैयारी की ।
3. मीरा ने सावन के महीने के लिए मनभावन शब्द का प्रयोग किया है ।
4. सावन का महीना मीरा को बहुत भा रहा है। उसका मन उमंग से भर गया है।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. मीरा भगवान श्रीकृष्ण की परम भक्त हैं । उनको श्रीकृष्ण का गुणगान करना बहुत प्रिय है । उनके द्वारा दोनों पदों की रचना का मुख्य उद्देश्य श्रीकृष्ण के प्रति अपने प्रेमभाव का प्रदर्शन करना ही है । पहले पद में कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन है और दूसरे पद में सावन का वर्णन और उसका प्रिय लगना। इसका कारण है कि उसमें श्रीकृष्ण से मिलन की संभावना छिपी है।
2. यशोदा श्रीकृष्ण से कहती हैं हे बंशीवाले लाल, जागो! रात बीत गई, सवेरा हो गया, घरों के द्वार खुल गए। गोपियाँ दही मथ रही हैं और उनके हाथों के कंगन झनकार कर रहे हैं। हे लाल, उठो! देखो देव और मनुष्य द्वार पर तेरी बाट देख रहे हैं। सभी ग्वाल-बाल कोलाहल कर रहे हैं और तेरी जय-जयकार कर रहे हैं।

**

पाठ-13

वीर कुँवर सिंह

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

निबन्ध से—

1. वीर कुँवर सिंह की अनेक विशेषताओं ने मुझे प्रभावित किया । उनका देशप्रेम, उनकी वीरता, उनकी कुशल रणनीति, उनका सभी धर्मों के प्रति सम्मान का भाव, उनका जनता के प्रति प्रेमभाव, ये सभी गुण मुझे बहुत प्रभावित करते हैं ।
2. कुँवर सिंह को बचपन में घुड़सवारी, तलवारबाजी और कुश्ती लड़ने में मजा आता था । इन कामों से उन्हें स्वतंत्रता सेनानी बनने में बहुत मदद मिली । इन्हीं कामों के कारण वह एक कुशल सेनानी बन सके और उन्होंने वृद्धावस्था में भी अँग्रेजों से डटकर लोहा लिया ।
3. कुँवर सिंह के स्वभाव में धार्मिक कट्टरता नहीं थी। वह सभी धर्मों का सम्मान करते थे। उन्होंने अपनी सेना में उच्च पदों पर मुसलमानों को भी नियुक्त किया था । उन्होंने पाठशालाओं के साथ ही मुसलमान बच्चों के लिए मदरसे भी बनवाए थे ।
4. प्रसंग इस प्रकार हैं—

   साहसी— कुँवर सिंह का साहस वृद्धावस्था में भी युवकों को लज्जित करता था । वह एक छोटे जमींदार थे लेकिन उन्होंने अत्याचारी अंग्रेजों का डटकर सामना किया । उन्होंने क्रान्तिकारियों का नेतृत्व किया और अपनी साहसिक छापामार रणनीति से अँग्रेज सेनापतियों को चकित और भयभीत कर दिया।

   उदार- कुँवर सिंह एक उदार हृदय शासक थे। उन्होंने आर्थिक स्थिति अच्छी न होते हुए भी निर्धनों की सहायता की। जनता के हित के लिए सड़कें, विद्यालय, कुएँ, तालाब आदि बनवाए । कुँवर सिंह विचारों में भी उदार थे। वह हिन्दू और मुसलमानों में भेदभाव नहीं करते थे । उन्होंने योग्य मुसलमानों को अपनी सेना में ऊँचे पद प्रदान किए ।

   स्वाभिमानी— कुँवर सिंह एक स्वाभिमानी व्यक्ति थे । वे चाहते तो अन्य जमींदारों की तरह ब्रिटिश शासकों की चापलूसी करके सुख से जीवन बिता सकते थे लेकिन उन्होंने अपने स्वाभिमान से कभी समझौता नहीं किया। वृद्धावस्था में भी उनका जीवन अत्याचारियों से संघर्ष करते हुए ही बीता ।
5. 'बसुरिया बाबा' एक महान संत थे । उन्हीं की प्रेरणा से कुँवर सिंह के हृदय में देशभक्ति और स्वाधीनता की भावना जागी थी । बाबा के सहयोग से कुँवर सिंह बिहार के सोनपुर के प्रसिद्ध मेले में जाकर क्रान्तिकारियों की गुप्त बैठकें करते थे और ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह की योजनाओं में भाग लेते थे। इस प्रकार कुँवर सिंह ने मेले का उपयोग स्वतंत्रता संग्राम के लिए किया।

निबंध से आगे—

सन् 1857 के चार सेनानी इस प्रकार हैं—

(i) **महारानी लक्ष्मीबाई —** यह झाँसी की रानी थीं । अँग्रेजों से युद्ध करते हुए यह वीरगति को प्राप्त हुईं ।

(ii) **ताँत्या टोपे —** इन्होंने सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी । कहा जाता है कि अँग्रेजों ने इन्हें गिरफ्तार करके फाँसी दे दी थी ।

(iii) **नाना साहब —** ये महाराष्ट्र के निवासी थे । इन्होंने सन् 1857 में क्रान्तिकारियों का नेतृत्व किया था ।

(iv) **कुँवर सिंह —** ये बिहार के जगदीशपुर के जमींदार थे। वृद्धावस्था में भी इन्होंने अपनी वीरता और छापामार युद्ध से अँग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे ।

2. परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है ।

अनुमान और कल्पना—

1. पढ़ने के साथ-साथ मुझे खेलने, पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने और यात्रा करने में बहुत मजा आता है। इसके अतिरिक्त ज्ञान बढ़ाने के लिए मैं इण्टरनेट का प्रयोग भी करता हूँ।
2. मैं पढ़ने में मन लगाता और देश में हो रही भारी उथल-पुथल के बारे में जानता । यदि मेरा संपर्क क्रान्तिकारियों से हो पाता तो मैं उनके समाचार और सूचनाएँ पहुँचाने का कार्य कर सकता था।

3. सोनपुर का मेला बहुत प्रसिद्ध मेला था । इसमें दूर-दूर से हजारों-लाखों लोग आते थे। भीड़ में शामिल होकर क्रान्तिकारियों का वहाँ एकत्र होना आसान होता । उन पर अँग्रेजी गुप्तचरों की निगाह भी नहीं पड़ती । इसके अतिरिक्त हजारों लोगों तक अपनी बात पहुँचाना सरल था । इन्हीं कारणों से स्वाधीनता की योजनाएँ बनाने के लिये इस मेले को चुना गया होगा ।

भाषा की बात—

नीति	– नीतियों
जिम्मेदारियों	– जिम्मेदारी
स्थिति	– स्थितियों
स्वाभिमानियों	– स्वाभिमानी
सलामी	– सलामियों
गोली	– गोलियों

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ग), 2. (क), 3. (ख), 4. (घ), 5. (ख)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. सैनिकों ने दिल्ली पर कब्जा करके अंतिम मुगल शासक बहादुरशाह जफर को भारत का शासक घोषित कर दिया ।
2. दोनों के बीच भीषण युद्ध कानपुर, लखनऊ, बरेली, बुंदेलखंड और आरा में हुए ।
3. स्वतंत्रता-संग्राम के प्रमुख सेनानियों में नाना साहब, धुंधू पंत, ताँत्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, वुँवर सिंह, अजीमुल्ला खान, मौलवी अहमदुल्लाह, बहादुर खान और राव तुलाराम आदि थे ।
4. कुँवर सिंह के पिता को जगदीशपुर की जमींदारी प्राप्त करने में बड़ा संघर्ष करना पड़ा । पारिवारिक झंझटों में फँसे रहने से पिता कुँवर सिंह की ठीक से देखभाल नहीं कर सके ।
5. कुँवर सिंह का मन पढ़ाई से अधिक घुड़सवारी, तलवारबाजी और कुश्ती लड़ने में लगता था।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. वीर कुँवर सिंह का हृदय उदार था। वह महान योद्धा तथा कुशल शासक थे। दूसरों की समस्याओं के प्रति वे संवेदनशील रहते थे। इनके यहाँ हिन्दू और मुसलमानों के सभी त्योहार साथ-साथ मिलकर मनाए जाते थे। साम्प्रदायिक सौहार्द का भाव था। उन्होंने पाठशालाओं के साथ-साथ मुसलमानों के लिए मकतब भी बनवाए थे। कुँवर सिंह जनमानस में बहुत प्रसिद्ध थे। बिहार की कई लोक भाषाओं में उनकी प्रशंसा के गीत आज भी गाए जाते हैं।
2. वीर कुँवर सिंह अपने साहसिक कार्यों से दुश्मनों की सेना पर विजय पाकर अमर हो गए। उनके चित्र देखकर दुश्मन अब भी भय ग्रस्त हो जाते हैं। वह वीर प्रसूता धरती महान है जहाँ वह पैदा हुए उनके कार्य महान थे। उनके कृतित्व और व्यक्तित्व तथा उनकी विजय के गीत हम हर समय गायेंगे। कुँवर सिंह स्वतंत्रता के महान सैनिक थे। वह आजादी के लिए दीवाने थे। लोगों का एक सर्वमान्य मत था कि वीर, पौरुषशाली महान व्यक्ति थे।
3. भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम अनेक कारणों से सफल नहीं हो सका । इनमें एक मान्य नेता का अभाव, सुसंगठन की कमी, अनुशासन की शिथिलता आदि प्रमुख कारण थे । लेकिन इस संघर्ष ने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की नींव रख दी । राष्ट्रीय एकता, सांप्रदायिक सद्भाव और स्वतंत्रता की तीव्र इच्छा को इसने जन्म दिया । सन् 1857 के वीर सेनानी स्वतंत्रता प्रेमियों के आदर्श बन गए । इस प्रकार भारत को स्वतंत्र कराने में इस क्रान्ति का महान योगदान था।
4. जगदीशपुर के युद्ध में कुँवर सिंह की सेना अँग्रेजों से हार गई लेकिन इससे कुँवर सिंह निराश नहीं हुए। उन्होंने अपने संघर्ष को धीरे-धीरे सारे उत्तर भारत में फैला दिया । सासाराम, मिर्जापुर, रीवा, कालपी, कानपुर, लखनऊ होते हुए वे आजमगढ़ जा पहुँचे उन्होंने वहाँ अंग्रेजों को दो बार पराजित किया और जगदीशपुर पर फिर अधिकार कर लिया। उनकी छापामार युद्ध नीति के आगे अँग्रेजी सेना के पास भागने या कट मरने के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं होता था ।

5. अंग्रेजी शासन से लोहा लेने के साथ-साथ कुँवर सिंह ने प्रजा के हित के भी अनेक काम किए । उन्होंने आरा में स्कूल के निर्माण में पूरा सहयोग दिया । आर्थिक स्थिति अच्छी न होते हुए भी निर्धनों की सहायता की । उन्होंने आरा और जगदीशपुर तथा आरा और बलिया के बीच सड़कें बनवाईं । जल की व्यवस्था के लिए कुएँ और तालाब बनवाए । उन्होंने सेना में हिन्दू तथा मुसलमान दोनों को उच्च पदों पर नियुक्त किया । धार्मिक मेलजोल को बढ़ावा दिया।

6. सन् 1857 के स्वतंत्रता सेनानियों में वीर कुँवर सिंह का नाम प्रसिद्ध है । कुँवर सिंह का जन्म बिहार के शाहाबाद जिले के जगदीशपुर में सन् 1782 ई. में हुआ था। इनके पिता का नाम साहबजादा सिंह और माता का नाम पंचरतन कुँवर था ।

बचपन में कुँवर सिंह को घुड़सवारी, तलवारबाजी और कुश्ती बहुत अच्छी लगती थीं । जब कुँवर सिंह ने जगदीशपुर की गद्दी संभाली, उस समय भारत पर अँग्रेजों का राज था। खेती, उद्योग-धंधे और व्यापार सबका हाल बुरा था । इससे देश में अंग्रेजों के विरुद्ध असंतोष बढ़ता जा रहा था । जगदीशपुर के जंगल में रहने वाले बसुरिया बाबा ने कुँवर सिंह के हृदय में देशप्रेम और स्वतंत्रता की भावना जगाई । जब दानापुर के सैनिकों ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया तो कुँवर सिंह ने उनका नेतृत्व करते हुए आरा पर अधिकार कर लिया । जगदीशपुर में कुँवर सिंह की हार हुई लेकिन उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई जारी रखी । उन्होंने अन्य सेनानियों से मिलकर अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए और आजमगढ़ में अंग्रेजी सेना को दो बार पराजित किया । उन्होंने फिर से जगदीशपुर पर अधिकार कर लिया ।

कुँवर सिंह महान योद्धा ही नहीं थे वह कुशल शासक भी थे। उन्होंने प्रजा के हित में अनेक काम किए । पाठशाला, मदरसे, कुएँ तालाब, सड़कें बनवाईं । वह हिन्दू और मुसलमानों के प्रति समानता का व्यवहार करते थे । सन् 1858 में उनका स्वर्गवास हो गया ।

**

पाठ-14 संघर्ष के कारण मैं तुनुकमिजाज हो गया: धनराज

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

साक्षात्कार से—

1. साक्षात्कार पढ़ने से धनराज की छवि एक ऐसे युवक के रूप में उभरती है जो कठिनाइयों से न घबराने वाला, धैर्यशील और संघर्षशील व्यक्ति है । वह अधिक पढ़ा-लिखा नहीं है लेकिन उसे हॉकी-खेल में अपनी कुशलता पर गर्व है । वह तुनुकमिजाज, स्पष्टवादी और क्रोध पर नियंत्रण न कर पाने वाला युवक है । इसके साथ ही वह भावुक भी है। वह किसी को कष्ट में नहीं देख सकता। वह मित्रता का सम्मान करने वाला एवं मातृभक्त पुत्र है।

2. धनराज पिल्लै की जीवनयात्रा बड़ी प्रेरणादायक है । उनका परिवार निर्धन था । यद्यपि उनको हॉकी-खेल से बहुत लगाव था लेकिन उनके पास एक हॉकी-स्टिक खरीदने को पैसे न थे । जब उनके भाई का भारतीय कैंप के लिए चुनाव हो गया तो उसने अपनी पुरानी हॉकी धनराज को दे दी। धनराज ने इसी हाकी से निरंतर अभ्यास किया और आगे बढ़ते चले गए । ऑलविन एशिया कप में जगह मिलने के बाद धनराज का तरक्की की ओर सफर प्रारम्भ हो गया। उन्होंने देश और विदेश में खूब नाम कमाया । आज धनराज के पास कार भी है, फ्लैट भी है और यश भी है । लेकिन इस ऊँचाई तक वह जमीन से उठकर पहुँचे हैं । इस ऊँचाई तक पहुँचने के लिए उन्होंने निरंतर संघर्ष किया है।

3. धन और यश दोनों ऐसी चीजें हैं जिन्हें अधिक पाने के बाद व्यक्ति का अहंकारी हो जाना प्राय: देखा जाता है । धनराज की माँ ने उसे यही सीख दी कि उसे जितनी प्रसिद्धि मिले वह उतना ही विनम्र बने । ऐसा व्यक्ति सदा लोकप्रिय बना रहता है । अहंकारी का पतन होना निश्चित है।

साक्षात्कार से आगे—

1. ध्यानचंद हॉकी के बहुत कुशल खिलाड़ी थे। उन्होंने भारतीय हॉकी टीम को देश और विदेशों में अत्यन्त सम्मान और पुरस्कार दिलाए। एक बार मैदान पर गेंद उनकी स्टिक पर आ जाती तो फिर उनसे गेंद को अलग कर पाना विपक्षी टीम के खिलाड़ियों को असम्भव-सा हो जाता था । लगता था गेंद उनकी स्टिक से चिपक गई हो । इसी कारण उनको लोग हॉकी का जादूगर कहकर पुकारते थे ।
2. जो वस्तु राष्ट्र के सम्मान और प्रसिद्धि से जुड़ी होती है उसे राष्ट्रीय होने का गौरव प्रदान किया जाता है । जैसे मोर को भारत का राष्ट्रीय पक्षी कहा जाता है । जिस समय ध्यानचंद भारतीय हॉकी टीम के कप्तान थे सारे विश्व में भारतीय हॉकी टीम का बोलबाला था । विश्व की सभी प्रमुख हॉकी टीमों को ध्यानचंद की टीम से पराजित होना पड़ा था । इसी कारण हॉकी खेल को राष्ट्रीय खेल का दर्जा दिया गया था । आज भारतीय हॉकी टीम को वह गौरव प्राप्त नहीं है । इसके अनेक कारण हैं ।
3. परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है ।

अनुमान और कल्पना—

1. धनराज पिल्लै की यह बात बहुत कुछ सही है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि लोगों को सम्मान, प्रसिद्धि और प्रशंसा तो बहुत मिली लेकिन उनका सारा जीवन धन के अभाव में बीत गया । प्रेमचंद बहुत बड़े और प्रसिद्ध कहानीकार थे लेकिन सदा अभावों से जूझते रहे ।

   नोट — छात्र अपने शिक्षक तथा बड़ों से इस बारे में और पता करें और लिखें ।
2. **(क)** अपनी गलतियों के लिए माफी माँगना आसान भी है और बड़ा मुश्किल भी । जिनका मन साफ और विचारशील होता है, उनके लिए अपनी गलती पर माफी माँगना आसान होता है । लेकिन जो हठी और अहंकारी होते हैं और जो अपने को सदा सही मानकर चलते हैं, उनके लिए गलती पर माफी माँगना बहुत कठिन होता है ।

   (ख) मैं गलती का पता चलने पर माफी माँग लेने में कोई बुराई नहीं मानता । मेरे आस-पास दोनों तरह के लोग हैं—माफी माँग लेने वाले और न माँगने वाले ।

   (ग) माफी माँगने के लिए जिस प्रकार एक संकोच रहित हृदय चाहिए, उसी प्रकार माफी देने के लिए एक उदार हृदय होना आवश्यक है । दोनों बातों का सरल या कठिन होना व्यक्ति के स्वभाव पर निर्भर है ।

भाषा की बात—

1. • **प्रेरणा**—शहीदों के जीवन से हमें देशप्रेम की प्रेरणा मिलती है ।

   प्रेरक—इस पाठ में धनराज पिल्लै के जीवन के कुछ प्रेरक प्रसंग दिए गए हैं ।

   प्रेरित—युवक ने कहा कि स्वामी विवेकानंद के उपदेशों ने उसे स्वाभिमानी और देशप्रेमी बनने को प्रेरित किया ।

   • **संभव**—अब उसका परीक्षा में उत्तीर्ण होना संभव नहीं लगता।

   संभावित—वह यात्रा के संभावित खतरों से परिचित नहीं था।

   संभवतः—संभवतः वह कविता शर्मा का भाई है ।

   • **उत्साह**—सभी साथी उत्साहपूर्ण मन से लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयास कर रहे थे ।

   उत्साहित—आपकी सफलता ने मुझे भी यह जिम्मेदारी लेने को उत्साहित किया है ।

   उत्साहवर्धक—यह समाचार हम सभी के लिए बड़ा उत्साहवर्धक है ।
2. कोश का अवलोकन छात्र स्वयं करें । यहाँ चार शब्दों के विभिन्न रूप दिए जा रहे हैं—

   प्रकाश—प्रकास, परकास, परगास

   पत्र—पत्ता, पत्तर, पात

   चंद्र—चंदर, चंदा, चाँद

   पर्यंक—पलंग, पलका, पलकिया।
3. खेल है क्रिकेट, संबंधित शब्द हैं—बॉल, बैट, विकेट, रन, कैच, गेंदबाज, बल्लेबाज, आउट, ईनिंग्स आदि।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ग), 2. (घ), 3. (क), 4. (क), 5. (घ)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. धनराज के पास नई स्टिक खरीदने के लिए पैसे नहीं थे । जब उनके भाई का भारतीय कैंप के लिए चुनाव हो गया तो भाई ने अपनी पुरानी स्टिक उन्हें दे दी ।
2. धनराज का कहना था कि वह पढ़ाई में बहुत फिसड्डी थे । किसी तरह दसवीं तक तो पहुँच गए, लेकिन आगे उनके लिए संभव नहीं था ।
3. धनराज को जिंदगी में हर छोटी-बड़ी चीज के लिए संघर्ष करना पड़ा । इसी कारण वह तुनुकमिजाज हो गए ।
4. धनराज सीधी-सपाट बात करने वाले और मुँहफट आदमी हैं । उन्हें गुस्सा भी बहुत आता है । इसके साथ ही वह बहुत भावुक भी हैं ।
5. धनराज की माँ ने उन्हें सीख दी है कि वह अपनी प्रसिद्धि को विनम्रता के साथ सँभालते रहें । कभी घमंड न करें ।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. धनराज बचपन में बहुत गरीबी में रहे । उनके भाई हॉकी खेलते थे इसलिए उनको भी हॉकी खेलने का शौक हो गया । लेकिन उनके पास एक हॉकी स्टिक खरीदने को भी पैसे नहीं थे । वे अपने साथियों से स्टिक उधार माँगकर काम चलाते थे । जब उनके बड़े भाई का भारतीय कैंप में चुनाव हो गया तो उसने अपनी पुरानी स्टिक धनराज को दे दी। अपनी स्टिक आ जाने के बाद धनराज का खेल निरंतर निखरता चला गया ।
2. धनराज ने बताया कि वह अपने आपको सदा असुरक्षित-सा महसूस करते थे । उनको जीवन में हर छोटी-बड़ी चीज के लिए जूझना पड़ा इससे उनका स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया । धनराज स्पष्टवादी हैं । वह बिना लाग-लपेट के सीधी बात कहते हैं । वह मुँहफट भी हैं। इसकी वजह से उन्हें कभी-कभी पछताना भी पड़ता है। उन्हें गुस्सा जल्दी आता है। वह एक भावुक व्यक्ति भी हैं। किसी को कष्ट में नहीं देख सकते । वह अपने दोस्तों और परिवार की बहुत कद्र करते हैं । गलतियों के लिए माफी माँगते हुए संकोच नहीं करते।
3. धनराज ने अपने उच्चकोटि के खेल से हॉकी को लोकप्रिय बनाया, लेकिन इसके बदले उन्हें जो मिलना चाहिए था नहीं मिला । उस समय आज की तरह खिलाड़ियों पर धन की वर्षा नहीं होती थी । एक प्रसिद्ध खिलाड़ी हो जाने पर भी उन्हें मुंबई की लोकल ट्रेनों से ही यात्रा करनी पड़ती थी । उन्होंने अपने कठोर परिश्रम के बल पर ही परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारा ।
4. उस समय तक धनराज एक नामी खिलाड़ी के रूप में प्रसिद्ध हो चुके थे लेकिन लोकल ट्रेन से सफर करना उनकी मजबूरी थी । उन्होंने लेखिका को बताया कि टैक्सी से सफर करने लायक उनकी हैसियत नहीं थी । इस घटना से धनराज को अनुभव हुआ कि वह एक मशहूर चेहरा बन चुके थे । उनको लोकल ट्रेनों में यात्रा करने से बचना चाहिए लेकिन वह क्या कर सकते थे ? वह जो कुछ खेल से कमाते थे, उससे परिवार का गुजारा होता था। उन्होंने धीरे-धीरे पैसे जमा करके बहिन की शादी की और माँ को हर महीने पैसे भेजने शुरू किए । आज उनके पास एक फोर्ड कंपनी की आईकॉन कार है जो उन्होंने अपनी मेहनत की कमाई से खरीदी थी ।

**

पाठ-15 आश्रम का अनुमानित व्यय

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

लेखा-जोखा—

1. गाँधी जी द्वारा आश्रम की स्थापना का उद्देश्य लोगों को श्रम का महत्व समझाने और अपना काम अपने हाथ से करने की शिक्षा देना भी था । साथ ही इसके पीछे बेरोजगारी दूर करने का उपाय भी सुझाना भी था । आश्रम के लोगों को विभिन्न पेशों में कुशल बनाने के लिए ही उन्होंने औजार खरीदने का निर्णय किया होगा।

   नोट — प्रश्न 2 व 3 परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं हैं ।

4. ऐसे अनेक काम हैं जिन्हें हम चाहकर भी नहीं सीख पाते हैं, जैसे—दूध दुहना, खाट बुनना, सिलाई करना, किताबों पर जिल्द चढ़ाना, घर में बिजली की छोटी-मोटी मरम्मत करना आदि। इसका कारण यह है कि घर में गाय-भैंस नहीं होना, खाट का प्रयोग न होना, सिलाई करने वाला या सिखाने वाला न होना। पढ़ाई के कारण सिखाने वाली संस्थाओं में प्रवेश नहीं ले सकते । फिर भी बिजली की मरम्मत तथा सिलाई का काम मैं अवश्य सीखूँगा । आज की महँगाई में ये बहुत बचत करा सकते हैं ।

5. इस बजट को गहराई से देखने के बाद अनुमान होता है कि आश्रम का उद्देश्य लोगों को अपने हाथ से काम करने की प्रेरणा देना तथा परिश्रम का महत्व समझाना रहा होगा । अपना काम अपने हाथों से करने में कोई शर्म की बात नहीं, यह अनुभव कराना तथा श्रमिकों के प्रति सहानुभूति और सम्मान जगाना भी इसका उद्देश्य हो सकता था । बेरोजगारी की समस्या के समाधान में भी यह सहायक हो सकता था ।

भाषा की बात—

1. **मूल शब्द इस प्रकार हैं—**

   प्रमाणित — प्रमाण, व्यथित — व्यथा,
   द्रवित — द्रव, मुखरित — मुख,
   झंकृत — झंकार, शिक्षित — शिक्षा,
   मोहित — मोह, चर्चित — चर्चा

   मूल शब्द इस प्रकार हैं—

   मौखिक — मुख, संवैधानिक —संविधान,
   प्राथमिक — प्रथम, नैतिक — नीति,
   पौराणिक — पुराण, दैनिक — दिन ।

   परिवर्तन—'इक' जुड़ने से मु को मौ, वि को वै, प्र को प्रा, नी को नै, पौ को पु और दि को दै हो गया ।

2. 1. रेलगाड़ी, 2. ऊँटगाड़ी, 3. खच्चरगाड़ी 4. पुस्तकालय, 5. शिवालय, 6. स्नानघर ।

   उपर्युक्त शब्दों में दूसरा यानि अन्तिम शब्द प्रधान है, उसी के ऊपर पहले शब्द का अर्थ टिका है ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ग), 2. (ख), 3. (ख), 4. (घ), 5. (ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. गाँधी जी के अनुसार आने वाले लोगों में सपरिवार और अकेले दोनों प्रकार के लोग हो सकते थे । अत: दोनों के लिए अलग-अलग व्यवस्था होनी चाहिए थी।
2. मकान में तीन रसोईघर और मकान कुल 50 हजार वर्ग फुट क्षेत्रफल में होना चाहिए था ।
3. खेती के लिए गाँधी जी के अनुमान के अनुसार पाँच एकड़ जमीन और तीस आदमियों की आवश्यकता थी।
4. गाँधी जी ने बजट में खेती के, बढ़ईगीरी के, मोची के, लुहारगीरी के और राजमिस्त्री के औजार शामिल किए थे ।
5. गाँधी जी के अनुसार एक व्यक्ति का खाने का मासिक खर्च दस रुपए तथा पचास व्यक्तियों का वार्षिक खर्च छह हजार रुपए लगाया था ।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. गाँधी जी अहमदाबाद में एक ऐसा आश्रम स्थापित करना चाहते थे जो प्राय: सभी दृष्टियों से आत्मनिर्भर हो । उनका अनुमान था कि स्थापना के प्रथम वर्ष के

बाद आश्रम अपना खर्चा चलाने में स्वयं समर्थ हो जाएगा । आश्रम की स्थापना और संचालन के खर्चों के बारे में उनके कई विकल्प थे । या तो अहमदाबाद के लोग सारा खर्च उठाएँ, या वे जमीन और मकान की व्यवस्था कर दें । बाकी का व्यय गाँधी जी अन्य उपायों से पूरा करने को तैयार थे ।

2. आश्रम को स्वावलम्बी बनाने के लिए गाँधी जी ने अनेक व्यवस्थाएँ सोची थीं । वह चाहते थे कि आश्रमवासी अपनी आवश्यकता की सभी वस्तुएँ स्वयं बनाएँ । अपने हाथ से हर काम करने में गर्व अनुभव करें । इसके लिए उन्होंने अपने बजट में खेती के, बढ़ईगीरी के, लुहारी के, मोची के और राजमिस्त्री के औजारों की, कपड़े बुनने के करघों की तथा रसोई के सारे बर्तनों की व्यवस्था की थी । यदि आश्रम की ये सारी व्यवस्थाएँ सुचारु ढंग से चलतीं तो आश्रमवासी लगभग स्वावलम्बी हो जाते ।

3. गाँधी जी की योजनानुसार चलने पर आश्रमवासियों का जीवन पूर्ण स्वावलम्बी रहा होगा । वे अपने द्वारा उगाए गए अन्न का प्रयोग करते होंगे। अपने द्वारा बनाए गये भोजन का स्वाद लेते होंगे । अपने द्वारा काते गए सूत से अपने द्वारा बुने गए वस्त्रों का प्रयोग करते होंगे । वे अपने द्वारा बनाए गए जूते-चप्पल पहनते होंगे। बढ़ईगीरी, लोहारी, राजमिस्त्री आदि के कार्यों से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते होंगे। आजकल के आश्रमों का जीवन बिल्कुल भिन्न है । ये आश्रम स्वावलम्बी नहीं होते । इनमें आधुनिक सुविधाओं का प्रबन्ध रहता है । आश्रमवासी बिजली, पंखे, कम्प्यूटर, मोबाइल फोन, एसी का प्रयोग करते हैं । इनको आश्रम न कहकर गेस्ट हाउस कहना उचित लगता है।

**